Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

आभे फाटे थीगरी,
कुण छ देवणहार।
ज्यूं गुर सहीत विगडीयो,
त्यारे चिहुं दिस परिया बघार।।

आकाश ही फट जाए तो कारी कौन लगाए? जब गुरु सहित शिष्य बिगड़ जाए, चारों ओर छेद ही छेद, तब कौन सुधारे।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 45 • 11 अगस्त - 17 अगस्त, 2025 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 09-08-2025 • पेज 20 • ₹ 10 रुपये

क्रोध को उपशांत करने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

देह ममत्त्व है अध्यात्म साधना में बाधक : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 18

Address Here

अध्यात्म का मार्ग कठिन है, पर मंजिल है अत्यंत श्रेष्ठ : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा द्विदिवसीय 'तेरापंथ ग्लोबल समिट' का हुआ आयोजन

कोबा, गांधीनगर।
03 अगस्त , 2025

महातपस्वी, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'वीर भिक्षु समवसरण' में 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया – एक मार्ग दुर्गम होता है और एक सुगम। किसी मार्ग पर चलना बड़ा कठिन होता है और किसी पर चलना आसान। जैसे नेशनल हाइवे बढ़िया बना हुआ हो तो उस पर चलना आसान हो सकता है, और कहीं कंकरीला, पथरीला, ऊबड़-खाबड़ पथ हो, उस पर नंगे पांव चलना हो तो वह मार्ग कठिन हो सकता है। यह तो भौतिक मार्ग का उदाहरण है, पर एक है अध्यात्म का पथ। अध्यात्म का पथ प्रथम दृष्टया कठिन हो सकता है, जबकि भौतिक सुखों का मार्ग सुगम और रुचिकर लग सकता है। अध्यात्म का मार्ग कठिन है, पर उसकी मंजिल अत्यंत श्रेष्ठ है।

रास्ता कैसा है, इसका भी महत्व है, पर इससे अधिक महत्व इस बात का है कि मंजिल कैसी है। यदि मंजिल श्रेष्ठ और उत्तम है तो चाहे मार्ग कठिन हो, व्यक्ति को उस पर चलना चाहिए। मार्ग चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, यदि मंजिल खराब है तो उस पर आगे बढ़ने का औचित्य नहीं है। एक मार्ग आपात पटु और परिणाम कटु होता है, दूसरा आपात कटु और परिणाम पटु। हमें तात्कालिक सुख-दुःख को गौण करके परिणाम पर ध्यान देना चाहिए। संयम का मार्ग, अध्यात्म का मार्ग है। साधु-साध्वियां दीक्षित होकर संयम और महाव्रतों के मार्ग पर चलने का संकल्प स्वीकार करती हैं। सांसारिक सुखों का मार्ग प्रथम दृष्टया सुखद लग सकता है, पर संयम का मार्ग कठिन होते हुए भी उसका परिणाम श्रेष्ठ है। मंजिल का महत्व मार्ग से अधिक है, मार्ग तो साधन है।

हर कोई साधु बन जाए, यह कठिन है। साधु के पांच महाव्रत होते हैं – सर्व प्राणातिपात विरमण महाव्रत, सर्व मृषावाद विरमण महाव्रत, सर्व अदत्तादान विरमण महाव्रत, सर्व मैथुन विरमण महाव्रत और सर्व परिग्रह विरमण महाव्रत। इसके साथ रात्रिभोजन विरमण व्रत और सचित्त भोजन-पान से विरति भी आवश्यक है।

यह मार्ग दुर्गम है, पर इस कठिन पथ पर चलने से परम सुख की प्राप्ति की संभावना है। (शेष पेज 17 पर)

साधना में बाधक है शरीर का अधिक उपचित होना : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
04 अगस्त , 2025

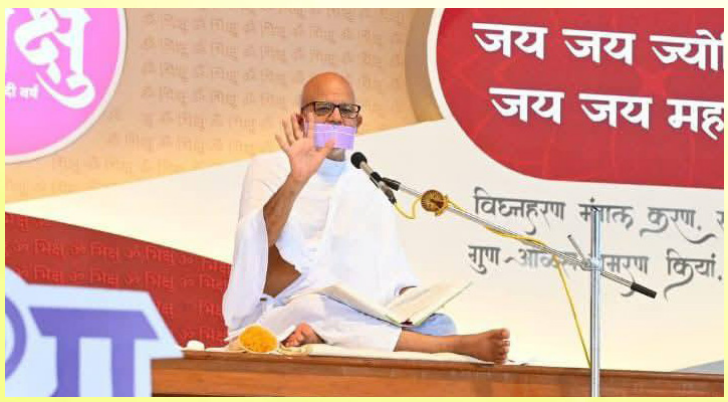

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा - साधु, साधुपन स्वीकार करता है। कोई बाल्यावस्था में, कोई युवावस्था में और कोई वृद्धावस्था में भी साधु बनते हैं। साधु जीवन में संयम की साधना करणीय होती है। संयम की साधना में जो बाधक तत्त्व लगे, उनसे दूर रहने का भी प्रयास वांछनीय है। साधना में एक बाधा है - शरीर का ज्यादा उपचित होना, मांस, शोणित का आधिक्य होना, शरीर खूब हृष्ट-पुष्ट होना। यहां दो बातें हो सकती हैं - साधना करने का साधन भी शरीर है तो शरीर साधना में बाधक भी बन सकता है। साधना के लिए एक संकरी गली बीच के मार्ग से गुजरना होता है कि मेरा शरीर सक्षम भी रहे, कार्यक्षम रहे और साथ में साधना में बाधा भी पैदा न हो। एकाकी साधना करने वाला साधु तो शरीर को थोड़ा कमजोर भी कर दे, क्योंकि कोई ऐसी जिम्मेदारी नहीं है, तकलीफ है तो है।

दो प्रकार की साधना हो जाती है - 1. संघबद्ध साधना 2. संघमुक्त साधना (एकाकी साधना)। दूसरी साधना कोई विशिष्ट साधु अच्छी तरह कर सकता है। एकाकी साधना की कुछ अर्हताएं होती हैं, यदि वे अर्हताएं हों तो एकाकी साधना की जा सकती है। यदि कोई किसी अन्य भावना से एकाकी साधना करे तो कठिनाई और नुकसान हो सकता है। आचार्य भी संघमुक्त होकर अकेले साधना कर सकते हैं, परन्तु उनके लिए अपेक्षित है कि संघ से मुक्त होने से पहले पीछे की व्यवस्था करें। अपने शिष्य को तैयार कर आचार्य संघ के सामने अपनी बात रखे कि मैं अब विशेष साधना में लगना चाहता हूं, अकेला रहकर साधना करना चाहता हूं। यह मेरा शिष्य है, इसे मैं अपना उत्तराधिकार सौंपता हूं। (शेष पेज 17 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
11 अगस्त - 17 अगस्त, 2025

क्रोध को उपशांत करने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
02 अगस्त, 2025

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अनुशास्ता 'शांतिदूत' आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन पाथेय करते हुए कहा कि आदमी के भीतर अनेक वृत्तियां विद्यमान रह सकती हैं। वीतरागता प्राप्त हो जाती है, क्षीण मोह की स्थिति प्राप्त हो जाती है तो राग-द्वेषात्मक वृत्तियां समूल रूप से समाप्त हो जाती हैं। सामान्य आदमी अथवा छठे गुणस्थान वाले साधु में अनेक वृत्तियां प्रकट होती हैं। 'आयारो' आगम में कहा गया है कि क्रोध रूपी वृत्ति को अलग करने, कम करने अथवा उसे सम्पूर्ण रूप से समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए। गुस्से का विवेक करना चाहिए।

आदमी को कई बार न चाहते हुए भी गुस्सा आ जाता है, आक्रोश का भाव आ जाता है। यह गुस्सा शाश्वत नहीं होता, थोड़े समय का ही होता है। अभव्य जीव, जिसमें मोक्ष गमन की योग्यता नहीं होती, में गुस्सा शाश्वत रूप में होता है। शेष तो किसी भी मानव में गुस्सा लम्बे काल तक नहीं रहता। किसी पर गुस्सा आया, लेकिन कुछ समय बाद ही वह गुस्सा शान्त हो जाता है। शास्त्र में बताया गया है कि गुस्से का आयुष्य लम्बा नहीं होता, इसलिए आदमी को इस गुस्से का ही परित्याग करने का प्रयास करना चाहिए।

गुस्सा आता है तो आत्म-प्रदेशों में अस्थिरता होती है। गुस्से का कालमान ज्यादा नहीं होता तो आदमी का जीवनकाल भी सीमित होता है। इस अनिश्चित जीवनकाल में आदमी क्यों किसी की शांति भंग करे, क्यों किसी से लड़ाई-झगड़ा कर आपसी सम्बन्धों को बिगाड़े? इसलिए आदमी को गुस्से का विवेक करने का प्रयास करना चाहिए और जितना संभव हो सके, गुस्से को कृश करने का, उपशांत ही रहने देने का प्रयास करना चाहिए। दीर्घ श्वास के साथ प्रेक्षाध्यान का प्रयोग भी गुस्से को कम कर सकता है। कभी गुस्सा भी आए तो आदमी को मौन कर लेना चाहिए। योग में गुस्सा आ जाए तो मन भी दूषित हो जाता है। आदमी को अपनी प्रकृति को बदलने का प्रयास करना चाहिए।

आदमी कहीं भी रहे—ऑफिस, दुकान, घर, बाजार या समाज—कहीं भी गुस्सा काम का नहीं होता। आदमी को शांति में रहने का प्रयास करना चाहिए। गुस्से को उपशांत करने के लिए आदमी को थोड़ी देर के लिए मौन भी कर लेना चाहिए। कहीं कोई निर्णय भी करना हो तो शांति के साथ करने का प्रयास होना चाहिए।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में 'संस्था शिरोमणि' जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में चतुर्थ 'तेरापंथ ग्लोबल समिट' के द्विदिवसीय आयोजन का शुभारंभ हुआ। इस समिट का थीम था — 'सृजन एवं समन्वय, आओ बने भिक्षुमय।' इसमें भाग लेने के लिए 13 देशों के 171 प्रवासी तेरापंथी परिवार अपने आराध्य की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। समिट के कन्वेनर जयेशभाई शाह, महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, डॉ. राज सेठिया और नरेश मेहता ने अपनी अभिव्यक्ति दी। मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी ने भी प्रवासी तेरापंथी सदस्यों को उद्बोधित किया।

आचार्यश्री महाश्रमणजी ने कहा कि तेरापंथ के लोग न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी बस गए हैं। पिछले कुछ वर्षों में तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में एक सुंदर परंपरा बनी है, जिसमें इन बिखरे हुए मोतियों को एक माला में पिरोया जा रहा है। यह एक सराहनीय उपक्रम है। हमारी समण श्रेणी भी विदेश जाकर वहां रहने वाले परिवारों को धार्मिक लाभ पहुंचाती है, जिससे सभी को अच्छा आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होता है। एक साथ यहां आने से भी अत्यधिक लाभ होता है। पर्युषण की उत्तम आराधना हो, संवत्सरी का उपवास और अन्य आध्यात्मिक उपक्रम अच्छे ढंग से चलें — यही उद्देश्य है। यह सम्मेलन सभी के लिए एक उत्तम आध्यात्मिक खुराक सिद्ध हो।

अहिंसा में सुख और हिंसा में है दुःख : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
31 जुलाई, 2025

प्रेक्षा विश्व भारती, कोबा में वीर भिक्षु समवसरण में 'आयारो' आगम के माध्यम से मंगल देशना प्रदान करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया – दुःख का कारण क्या है? दुःख का कारण बताया गया है – आरंभ। आरंभ (हिंसा) से दुःख पैदा होता है। दुःखों की जननी, दुःखों को पैदा करने वाली हिंसा होती है।

व्यावहारिक रूप में देखें तो जहां हिंसा होती है, वहां दहशत फैलती है और लोग दुःखी बन जाते हैं। कोई झूठी अफवाह भी दुःख का कारण बन सकती है। दो राष्ट्रों के बीच यदि युद्ध होता है तो दोनों ही ओर के लोगों में दहशत और भय उत्पन्न हो जाता है। हिंसा मानसिक दहशत फैलाने वाली और व्यक्ति को दुःखी बनाने वाली बन जाती है। युद्ध विकास में भी बाधक है और अर्थ की हानि का कारण भी बन सकता है।

नैश्चयिक-पारमार्थिक रूप में भी हिंसा दुःख का कारण है। गजसुकुमाल मुनि का उदाहरण लें तो जब उनके सिर पर अंगारे रखे गए, तो उन्हें कितना कष्ट हुआ होगा। सौमिल ब्राह्मण ने हिंसा का कार्य किया, उसने कष्ट दिया और बाद में स्वयं भी भयभीत हुआ होगा। गजसुकुमाल मुनि के पिछले जन्म के कर्मों के कारण यह दुःख की स्थिति बनी। उनके जीव ने एक छोटे बच्चे के सिर पर गरम रोटियां रखी थीं, उस जन्म में की गई हिंसा का परिणाम इस जन्म में दुःख और मृत्यु के रूप में मिला।

अहिंसा में सुख है और हिंसा में दुःख है। जहां हिंसा है, वहां अशांति और जहां अहिंसा है, वहां शांति है। यदि आपके मन में अहिंसा है तो आपके मन में भी शांति और आसपास के लोगों में भी शांति होगी। यदि परिवार में लड़ाई-झगड़ा शुरू हो जाए तो स्वयं के साथ-साथ परिवार के अन्य लोगों के मन में भी अशांति हो जाती है। हिंसा चाहे छोटे रूप में हो या बड़े रूप में, वह अशांति पैदा करने में निमित्त बन सकती है। यह जानकर व्यक्ति को हिंसा से निवृत्त होना चाहिए और अहिंसा के रास्ते पर चलना चाहिए। व्यक्ति को क्षमा और सहिष्णुता रखनी चाहिए।

जीवन चलाने में होने वाली हिंसा का अल्पीकरण करने का प्रयास करें। खेती, आजीविका आदि में भी कैसे हिंसा कम हो सके, इसकी चेष्टा करनी चाहिए। ऐसा व्यापार जिसमें अधिक हिंसा हो, उससे यथासंभव बचना चाहिए। गृहस्थ जीवन में भी जितना हिंसा का अल्पीकरण हो सके, यह प्रयास होना चाहिए। भोजन में भी जमीकंद का उपयोग न करने का संकल्प होना चाहिए।

मन में हिंसा का भाव न आए, वाणी में हिंसा की अनुमोदना न हो और शरीर से भी किसी को दुःख न पहुंचाएं। दुःख हिंसा से पैदा होता है, इसलिए हिंसा से निवृत्त रहने का प्रयास करना चाहिए।

'मुणिन्द मोरा' चमत्कारी ढाल पर भव्य कार्यक्रम

कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में 'मुणिन्द मोरा' विषय पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (कलकता-पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा भिक्षु विहार में किया गया। कार्यक्रम में वृहत्तर कोलकाता के श्रावक-श्राविकाएं बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

मुनि जिनेश कुमार जी ने अपने प्रवचन में बताया कि तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य जीतमल जी सिद्धहस्त कवि, साधक और महान ध्यानयोगी संत थे। उन्होंने राजस्थानी भाषा में साढ़े तीन लाख पद्य रचकर साहित्य को समृद्ध किया। वे विधिवेत्ता, आगमवेत्ता, तत्वज्ञानी, आशुकवि और कर्मठ योगी थे।

वि.सं. 1914 में बीदासर में प्रवास के दौरान पश्चिम रात्रि में एक दैविक उपद्रव के तहत अंगारों की वर्षा हुई, जिससे सभी संत बेहोश हो गए। ऐसे समय में आचार्य जीतमल जी ने आचार्य भिक्षु आदि महापुरुषों का गुणोत्कीर्तन करते हुए 'मुणिन्द मोरा' ढाल की रचना की। ढाल पूर्ण होते-होते उपद्रव शांत हो गया। तब से इसे चमत्कारी माना जाता है, और विश्वास है कि इसका संगान-स्मरण संकटों को दूर कर मन को समाधिस्थ करता है।

मुनि जिनेश कुमार जी ने इस घटना का विस्तार से वर्णन करते हुए बीदासर क्षेत्र और उसके दृढ़धर्मी श्रावक समाज की प्रशंसा की। मुनि परमानंदजी ने अपने विचार व्यक्त किए, जबकि मुनि कुणाल कुमार जी ने मंगलाचरण प्रस्तुत कर सामूहिक 'मुणिन्द मोरा' संगान से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। विशेष रूप से बीदासर श्रावक समाज के विवेक दुगड़ ने गीत का संगान किया।

पूर्वांचल सभा द्वारा तपस्वियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्वांचल तेरापंथी समाज की सभी शाखाओं के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा।

परिवार कैसे रहे खुशहाल कार्यशाला

धुरी, पंजाब।

साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में 'परिवार कैसे रहे खुशहाल' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ स्वाति जैन के सुमधुर मंगलाचरण से हुआ।

साध्वी कनकरेखा जी ने उद्बोधन में कार्यशाला के सहभागियों को सम्बोधित करते हुए कहा – परिवार एक ऐसा नीड़ है, जहां थका-मांदा हर इंसान सुख-चैन का अनुभव करता है, सुकून पाता है। परिवार व्यक्तित्व निर्माण की प्रयोगशाला है।

पारस्परिक सौहार्द के जरिए जीवन की बगिया में परिवार का हर सदस्य प्रेम, मैत्री, करुणा, सामंजस्य और सहिष्णुता के सतरंगी फूल खिला सकता है, जिसकी महक आदर्श परिवार के मुकाम तक पहुँचती है और परिवार में खुशहाली नजर आती है।

आगे आपने कहा – जहाँ बड़ों के प्रति विनम्रता और छोटों के साथ वात्सल्य होता है, वहीं परिवार धरती पर स्वर्ग का नजारा दिखाता है।

साध्वी संवरविभा जी ने विषय के साथ अपने विचार रखते हुए कुशल संचालन किया।

साध्वी गुणप्रेक्षा जी ने परिवार की खुशहाली का राज बताते हुए कहा – हम सद्गुण-सौरभ से सुरभित परिकर में खुशियों के फूल खिलाएं। इसके पश्चात् जिज्ञासा-समाधान के सिलसिले में 'पॉइंट ऑफ द परफेक्ट' प्रतियोगिता में भाग लेने वाले विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

परिवार उत्कर्ष कार्यशाला का आयोजन

बालोतरा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा के तत्वावधान में 'परिवार उत्कर्ष कार्यशाला' का भव्य आयोजन हुआ।

विशाल परिषद् को सम्बोधित करते हुए साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा – परिवार वह प्यार भरा नीड़ है, जहां दिन भर से थके-हारे पंछी को विश्राम मिलता है। परिवार वह रसमयी धरती है, जहां हर बीज को फलने व फूलने का मौका मिलता है। परिवार जीवन का आधार है, जीवन का विकास और विश्वास है, परिवार है तो जीवन में खुशहाली है।

साध्वीश्री ने कहा – घर में सिर्फ साथ रहना ही परिवार नहीं है, बल्कि साथ-साथ जीना, एक-दूसरे को समझना एवं एक-दूसरे की परवाह करना ही परिवार है। जिस परिवार में प्रेम और मान-सम्मान होता है, वही परिवार उत्कर्ष करता है। साध्वीश्री ने संस्कारों की चर्चा करते हुए कहा – प्रीवेडिंग क्या हमारे संस्कारों एवं संस्कृति के अनुरूप है? बेबी शावर जैसे कार्यक्रम क्या हमारे परिवारों को दिखावे की ओर नहीं ले जा रहे हैं?

कोई भी कार्यक्रम हो, उसमें संस्कारों का पुट रहना चाहिए, तभी परिवार में प्रसन्नता का, संस्कारों का, रिश्तों का उत्कर्ष होगा।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा – परिवार रूपी सागर में प्रसन्नता की लहरें हिलोरे लें, इसके लिए अपेक्षा है कि परिवार का हर सदस्य श्रम-देवता की पूजा करे। अपने हाथों में मेहनत की मेंहदी लगाएं।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने मंच संचालन करते हुए कहा – परिवार दुनिया की सबसे बड़ी दौलत है, उसे संभालकर रखें। साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने आगमवाणी का विश्लेषण किया।

संसार समुद्र से पार होने की आकांक्षा वाला ही वीर

सिटीलाइट, सूरत।

प्रोफेसर डॉ. साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने सिटीलाइट तेरापंथ भवन में मुमुक्षु अंजली के लिए समायोजित मंगलभावना समारोह में उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा – वीर वही होता है जो महान पथ पर चरणन्यास करता है। मुमुक्षु अंजली के मन में जागरण दीप प्रज्वलित हुए, संकल्प जगा, पंथ चुना और सही निर्णय करके मंजिल की ओर गतिमान हो गई। सही रास्ते का चयन भी गुरु कृपा से होता है।

विनय, समर्पण, साहस और श्रद्धा-भावना के साथ आगे बढ़ती रहो। योग्यता का उपयोग संघ सेवा में करती रहो।

इस अवसर पर दीक्षार्थिनी अंजली के पारिवारिक जन उपस्थित थे। साध्वी श्री ने अंजली की बहनों को संयम मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी।

दीक्षार्थिनी अंजली ने अपने उद्गार में कहा – मुझे गुरु के अनमोल वचनों ने सन्मार्ग दिखाया। अभिभावकों का सहयोग, सहोदरी अग्रजा साध्वी मंजुलयशा जी की प्रेरणा, 'शासनश्री' साध्वी मधुबाला जी का समयोचित पथ-दर्शन के प्रति मैं कृतज्ञ हूं। उसने कहा – मैं प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी से भी आशीर्वाद चाहती हूं। अध्यात्म की दिशा में आरोहण करती रहूं। साथ ही सम्पूर्ण परिषद को दीक्षा के अवसर पर आगम हेतु निमंत्रण दिया।

साध्वी डॉ. राजुलप्रभा जी ने विकासमयी संयम यात्रा के प्रति आध्यात्मिक शुभकामनाएं दीं। साध्वीवृंद ने समवेत स्वर में गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने 'शुभं ते पन्थानः' गीत का सामूहिक संगान कर दीक्षार्थिनी बहन को वर्धापित किया।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष हजारीमल भोगर, मंत्री महेन्द्र गांधी मेहता, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष नमन मेड़तवाल ने मंगलकामनाएं दीं। तेरापंथ सभा, महिला मंडल एवं युवक परिषद द्वारा दीक्षार्थिनी बहन अंजली का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी डॉ. शौर्यप्रभा जी ने कुशलतापूर्वक किया।

जीवन विज्ञान एवं व्यक्तित्व विकास कार्यशाला आयोजित

हैदराबाद।

भारेडपल्ली स्थित गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज में अणुव्रत जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं व्यक्तित्व विकास पर आधारित कार्यशाला का आयोजन निर्मला बैद द्वारा सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत 'तुलसी अष्टकम' के मंगलाचरण से

की गई। कार्यशाला में निर्मला बैद ने छात्राओं को जीवन में भावनात्मक विकास, विनम्रता, सहनशीलता, बड़ों के प्रति आदर, एवं अहंकार से मुक्त जीवन शैली अपनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि एक लड़की सिर्फ घर नहीं, समाज को भी संवारती है।

अणुव्रत जीवन शैली को अपनाकर आतंकवाद, भ्रष्टाचार एवं हिंसा जैसी सामाजिक बुराइयों को कम किया जा सकता है। नशे से होने वाले नुकसान, संगति का प्रभाव, और मांसाहार से होने वाली हानियों पर भी प्रकाश डाला गया।

प्रकृति संरक्षण के संदेश के रूप में 'बिजली बचाओ, पानी बचाओ, पर्यावरण बचाओ' जैसे स्लोगन वाले स्टिकर्स वितरित किए गए। साथ ही, जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान की पुस्तकें भी भेंट की गईं। छात्राओं को मेमोरी पावर बढ़ाने और मन की एकाग्रता के प्रयोग भी बताए गए।

कॉलेज की प्रिंसिपल मैडम स्वप्ना का आयोजन में विशेष सहयोग रहा। हनुमान जिनेंद्र बैद द्वारा कार्यशाला की सामग्री प्रदान की गई।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

-आचार्य श्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
11 अगस्त - 17 अगस्त, 2025

कदम बढ़ाओ मंजिल पाओ कार्यशाला का आयोजन

गांधीनगर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा गांधीनगर के तत्वावधान में डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में प्रशिक्षिका बहनों के लिए 'कदम बढ़ाओ मंजिल पाओ' कार्यशाला का आयोजन हुआ।

मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा - ज्ञान दान एक अच्छा उपक्रम है, प्रशिक्षिकाएं घर गृहस्थी का दायित्व संभालने के साथ-साथ ज्ञानशाला को भी संभालती है, जिससे बच्चों का विकास हो और वे अपनी मंजिल को पा सके। मुनिश्री ने कहा प्रशिक्षिकाओ में ज्ञान, व्यवहार एवं समर्पण की भावना होनी चाहिए। मुनिश्री ने अभिभावकों से आह्वान किया कि वे अपने बच्चों को ज्ञानशाला भेजें, जिससे वे गुरु के प्रसाद के हकदार बन सके। मुनि आदित्य कुमार जी ने 'कदम बढ़ाओ मंजिल पाओ' गीत प्रस्तुत किया एवं बच्चों के विकास हेतु ध्यान का प्रयोग भी बताया। सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कार्यशाला के बारे में विचार रखे। उपासक अरविंद मांडोत ने प्रशिक्षिकाओं से कहा कि अपने लक्ष्य को बड़ा बनाएं, प्रशिक्षण करते समय स्वयं की अच्छी तैयारी एवं प्रामाणिकता रखें। मुनिश्री ने प्रशिक्षिकाओं से आचार्य भिक्षु से सम्बंधित ज्ञानवर्धक प्रश्न पूछे, तेरापंथ सभा द्वारा 7 विजेताओं को प्रोत्साहित किया गया।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, महिला मंडल अध्यक्षा लक्ष्मी बोहरा, अणुव्रत समिति मंत्री लाभेश, एवं 85 प्रशिक्षिकाओं ने इस कार्यशाला में भाग लिया ।

संक्षिप्त खबर

आगम मंथन प्रतियोगिता प्रमाण पत्र वितरण समारोह

नोखा। समण संस्कृति संकाय लाडनूं द्वारा आयोजित आगम मंथन प्रतियोगिता 2024 का प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम 'शासन गौरव' साध्वी राजमती जी के सान्निध्य में रखा गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि भगवान महावीर की वाणी आगम में है। उसका ज्ञान, अध्ययन करना जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। इससे जीवन जीने की कला सीखी जा सकती है। आगम मंथन प्रभारी इदरचंद बैद 'कवि' ने संचालन करते हुए कहा कि नोखा में आगम के प्रति अच्छी अभिरुचि है। प्रति वर्ष इसमें स्थान प्राप्त करते है। इस बार 20 प्रमाण पत्र वितरण किए गए। सभा अध्यक्ष शुभकरण चोरड़िया, मंत्री मनोज घीया, प्रायोजक घेवरचन्द भंवरलाल बैद ने पुरस्कार वितरण किया। राज कुमारी मरोठी, सुमन टांटीया ने तीन-तीन प्रमाण पत्र प्राप्त कर नोखा का गौरव बढ़ाया।

निःशुल्क चिकित्सकीय ओपीडी सेवाओं का शुभारम्भ

जयपुर। तेरापंथ युवक परिषद् न्यास, जयपुर के द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेन्टर में निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श ओपीडी का शुभारम्भ हुआ। जिसमें डॉ. आर के जैन (MBBS, DMRD, Ex. Capt. AMC) चिकित्सकीय सेवाएं प्रदान करेगें। इस अवसर पर न्यास के चैयरमैन रवि छाजेड़, सह न्यासी श्रेयांश पारख, मंत्री शरद बरड़िया, तेयुप जयपुर कार्यसमिति सदस्य सहित अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

सामाजिक सेवा कार्य

कटक। तेरापंथ युवक परिषद ने सेवा कार्य के अंतर्गत रेड क्रॉस ब्लड बैंक के माध्यम से सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय, मार्कंडेश्वर, पुरी में दो सीलिंग पंखे प्रदान किए गए। स्कूल प्रबंधन ने सहयोग के लिए तेयुप का आभार व्यक्त किया।

जप-अनुष्ठान है हमारी प्राण ऊर्जा का संवर्धन करने वाला

बालोतरा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में नए तेरापंथ भवन के विशाल हॉल में, विशाल उपस्थिति में पंचगढ़ी पंचपरमेष्ठी आत्मरक्षा कवच अनुष्ठान का भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा, जैन साधना पद्धति में आत्मा की उपासना के अनेक आयाम हैं। उनमें एक है जप अनुष्ठान। जप में तन्मय बनकर व्यक्ति अपनी आत्मा का दर्शन कर सकता है। जप के द्वारा आत्मा की उज्ज्वला वृद्धिंगत होती है। जप प्राण ऊर्जा का भी संवर्धन करने वाला है। जब जप अनुष्ठान का रूप ले लेता है, तो जप की शक्ति शतगुणित हो जाती है। पंचपरमेष्ठी में अनंत शक्ति निहित है। उस शक्ति का देशांश हमारे जीवन का कायाकल्प कर सकता है। पंचपरमेष्ठी ऊर्जा का अक्षय स्रोत है, जिनकी आराधना से हम भी ऊर्जा के महापुंज बन सकते हैं। पंचपरमेष्ठी का तन्मयता से किया जाने वाला अनुष्ठान शरीर की सुरक्षा तो करता ही है, आत्मा के लिए भी सुरक्षा कवच का निर्माण करता है।

साध्वीश्री ने पांच धागों पर पंचपरमेष्ठी का विशेष अनुष्ठान करवाया। आत्मा को भीतर तक झकझोरने वाले इस अनुष्ठान को करके पूरी परिषद रोमांचित एवं भावविभोर हो गई।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा, ये वो अनुष्ठान है, जो आपके जीवन में खुशहाली ला सकता है, रिश्तों में समरसता ला सकता है एवं नकारात्मक शक्तियों से आपका बचाव कर सकता है। इससे पूर्व साध्वी कर्णिकाश्री जी, डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी, साध्वी समतवयशा जी, साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने महामंत्र गीत के द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

बालभक्ति संध्या का दिखा अद्भुत नजारा

सिटीलाईट, सूरत।

साध्वी प्रोफेसर डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु बोधि दिवस और जन्मदिवस के अवसर पर रात्रिकालीन बालभक्ति संध्या का भव्य आयोजन तेरापंथ भवन सिटीलाईट तेरापंथ भवन में हुआ। साध्वीश्री की प्रेरणा से प्रथम बार बाल भक्ति संध्या आयोजित हुई। मनमोहक कार्यक्रम में उद्गार प्रदान करते हुए साध्वीश्री ने कहा - तेरापंथ धर्म संघ गुणवत्ता युक्त अद्वितीय संघ है, यहाँ एक गुरु के इंगित और निर्देशानुसार हर संस्थाएं सजगता के साथ संघ उन्नयन और प्रभावना के लिए श्रम, समय और शक्ति का सम्यक् नियोजन कर रही हैं। जागरूकता से दायित्वों का निर्वहन कर रही हैं। बालभक्ति संध्या का रूप देखकर सभी का मन प्रसन्न है। बच्चों ने प्रायः बिना देखे आत्मविश्वास के साथ गीत प्रस्तुत किए। यह सबके लिए प्रेरणा है। बाल मुख से किया गया हर संगान आकर्षक था। इस कार्यक्रम की संयोजना और सफलता के लिए ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने सराहनीय मेहनत की है। इन उभरती प्रतिभाओं में साहस का संचार कर हौसला बढ़ाना चाहिए।

कार्यक्रम का प्रारंभ ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं के संगान से हुआ। लगभग 45 बच्चों ने भिक्षु अभ्यर्थना में भावविभोर होकर समा बांधा। बच्चों की प्रस्तुति से सारी परिषद अभिभूत हो उठी। इस संगीत प्रतियोगिता के निर्णायक हेमराज महरवंशी और आदित्य शाह रहे। निर्णायकों के निर्णय अनुसार 5 से 9 वर्ष तक के प्रतिभागियों में प्रथम छवि भोगर, द्वितीय परम मेहता एवं तृतीय स्थान पर भव्य गोलेछा रहे। 10 से 14 वर्ष तक के प्रतिभागियों में प्रथम तनिश अब्बानी, द्वितीय रिवा मेहता एवं तृतीय रूही मेहता रहे। सभी विजेताओं और प्रतिभागियों को तेरापंथ सभा द्वारा सम्मानित किया गया।

शिक्षा से भी अधिक जरूरी है संस्कार निर्माण

पड़िहारा।

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में 'संस्कार निर्माण कार्यशाला' का भव्य आयोजन स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा किया गया।

इस कार्यशाला का विषय था – 'कैसे हो संस्कारी पीढ़ी का निर्माण।' कार्यक्रम का शुभारंभ नागरमल सुराणा द्वारा सुमधुर गीतिका के माध्यम से मंगलाचरण से हुआ।

साध्वी संघप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षा से भी अधिक आवश्यक है संस्कारों का निर्माण। उन्होंने कहा कि माता-पिता, अभिभावक और गुरुजन स्वयं को संयमित एवं अनुशासित रखते हुए बच्चों के आचार, विचार, व्यवहार और जीवन की प्रत्येक गतिविधि में धार्मिक, नैतिक व आध्यात्मिक संस्कारों का संपोषण करें। साध्वीश्री ने बच्चों को पाँच संकल्प दिलवाए तथा उन्हें मोबाइल, टेलीविजन और नशीले पदार्थों से दूर रहने की प्रेरणा दी।

साध्वी सोमश्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि संस्कारों का निर्माण बच्चे में गर्भकाल से ही प्रारंभ हो जाता है। उन्होंने बच्चों को नमस्कार महामंत्र का जाप करने की प्रेरणा दी।

कार्यशाला में सुयश सुराणा और रौनक भार्गव द्वारा ज्ञानशाला गीत 'अर्ह अर्ह की वंदना फले' सुमधुर स्वरों में प्रस्तुत किया गया। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा 'तोता-तोता क्यूँ रोता' एक्शन प्रोग्राम मनोरंजक रूप से प्रस्तुत किया गया।

तेरापंथ सभा के मंत्री पन्नालाल दुगड़, उपासक मनोज सुराणा सहित अन्य वक्ताओं ने विविध शैलियों में अपने भाव प्रकट किए। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा 'लेता मारा प्रभुजी रो नाम' गीत की रोचक एवं सुंदर प्रस्तुति दी गई।

सरिता देवी सुराणा एवं अमरचंद सुराणा ने 'बच्चों को संस्कारी कैसे बनाएं' विषय पर सारगर्भित विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा नमस्कार मुद्रा और आसन प्रायोगिक रूप में प्रस्तुत किए गए, जो विशेष सराहनीय रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी प्रांशुप्रभा जी द्वारा किया गया।

शपथ ग्रहण समारोह

जसोल। साध्वी रतिप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल, जसोल का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई, तत्पश्चात भिक्षु अष्टकम से मंगलाचरण किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष कंचनदेवी ढेलडिया ने नवगठित पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई देते हुए नव-निर्वाचित अध्यक्ष ममता मेहता को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इसके पश्चात अध्यक्ष ममता मेहता ने अपनी नवगठित कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए सभी पदाधिकारियों को शपथ दिलाई। नव कार्यकारिणी में संरक्षिका संतोष डोसी, अध्यक्ष ममता मेहता, मंत्री जयश्री सालेचा, उपाध्यक्ष (प्रथम) रक्षा सालेचा, उपाध्यक्ष (द्वितीय) हेमलता बागमार, सहमंत्री (प्रथम) मीना गोलेछा, सहमंत्री (द्वितीय) संगीता बुरड़, कोषाध्यक्ष जयश्री भंसाली, प्रचार-प्रसार मंत्री डिंपल सालेचा तथा संगठन मंत्री मीना भंसाली को मनोनीत किया गया। इसके साथ ही जसोल तेरापंथ कन्या मंडल की संयोजिका के रूप में अंजली चौपड़ा, सह-संयोजिका हर्षिता बुरड़ एवं कन्या मंडल प्रभारी सुमन कोठारी को मनोनीत किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन रक्षा सालेचा ने किया।

गुवाहाटी। मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमारजी एवं मुनि रमेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद्, गुवाहाटी के सत्र 2025–26 का शपथ विधि समारोह स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप साथियों द्वारा विजय गीत के संगान से हुआ। इस अवसर पर निवर्तमान अध्यक्ष सतीश कुमार भादानी ने समारोह में पधारे सभी महानुभावों का स्वागत किया एवं विगत वर्ष में समाज से मिले सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। तत्पश्चात उन्होंने नवमनोनीत अध्यक्ष विकास नाहटा को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। नव निर्वाचित अध्यक्ष विकास नाहटा ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की, जिसमें उपाध्यक्ष (प्रथम) तरुण कुमार बैद, उपाध्यक्ष (द्वितीय) अंकित कुंडलिया, मंत्री हितेश कुमार चोपड़ा, सहमंत्री (प्रथम) अजीत सेठिया, सहमंत्री (द्वितीय) ऋषभ बोरड़, कोषाध्यक्ष अंकुश महनोत एवं संगठन मंत्री मनोज कुमार भादानी सहित समस्त कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई। साथ ही, परामर्शक मंडल एवं प्रबुद्ध मंडल की भी घोषणा की गई। निवर्तमान समिति के पदाधिकारियों द्वारा नवमनोनीत पदाधिकारियों को कार्यभार हस्तांतरित किया गया। नव निर्वाचित अध्यक्ष विकास नाहटा ने समाज के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए कहा कि वे अभातेयुप के निर्देशों एवं स्थानीय कार्यों को युवा साथियों के सहयोग से सक्रियता के साथ संपादित करने का प्रयास करेंगे। तत्पश्चात, मुनिवृंद ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि पद के साथ प्राप्त दायित्व की महत्ता को समझना आवश्यक है और धर्मसंघ के प्रति निरंतर कार्यरत रहने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर सभी संघीय संस्थाओं एवं अन्य संगठनों ने नव निर्वाचित अध्यक्ष को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित कीं। मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत असम के एमबीडीडी राज्य प्रभारी नवीन मालू, हेमंत सेठिया एवं अन्य परिषद् साथियों द्वारा मुनिवृंद के सान्निध्य में बैनर का अनावरण किया गया। कार्यक्रम का संचालन निवर्तमान मंत्री पंकज सेठिया ने कुशलतापूर्वक किया एवं धन्यवाद ज्ञापन नव मनोनीत मंत्री हितेश कुमार चोपड़ा ने किया।

पूर्वांचल-कोलकाता। तेयुप पूर्वांचल कोलकाता के सत्र 2025-26 के नव मनोनीत अध्यक्ष राजीव बोथरा एवं पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी समिति के सदस्यों का शपथ ग्रहण समारोह साल्ट लेक, कोलकाता में मुनि जिनेश कुमारजी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। तत्पश्चात कोलकाता की 6 परिषदों – तेरापंथ युवक परिषद पूर्वांचल कोलकाता, साउथ कोलकाता, उत्तर कोलकाता, टॉलीगंज, साउथ हावड़ा, लिलुआ, सैंथिया एवं हिंदमोटर – के निवर्तमान अध्यक्षों और नव मनोनीत अध्यक्षों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष ईश्वरचंद बैद द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया गया और सभी नव मनोनीत अध्यक्षों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। उसके बाद उनकी कार्यकारिणी टीम का सामूहिक रूप से शपथ ग्रहण हुआ। सभी परिषदों के अध्यक्षों ने नवगठित कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए पदाधिकारियों के नामों की जानकारी दी। तेयुप पूर्वांचल कोलकाता के अध्यक्ष राजीव बोथरा ने अपने पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के नामों की घोषणा की – उपाध्यक्ष-1 – धनपत बरडिया, उपाध्यक्ष-2 – आशीष लिंगा, मंत्री – सिद्धार्थ दूधेडिया, सहमंत्री-1– लोकेश दुगड़, सहमंत्री-2 – नैतिक भादानी, कोषाध्यक्ष – रितेश बैद, संगठन मंत्री – मनोज श्यामसुखा। शपथ ग्रहण कार्यक्रम का सफल संचालन अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष ईश्वरचंद बैद द्वारा किया गया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन कार्यालय का शुभारंभ

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** राजलदेसर निवासी पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी शालिनी बैद के नूतन प्रतिष्ठान द वॉर्डरोब बुटीक का शुभारंभ जैन संस्कारक पुष्पराज सुराणा एवं राकेश सिंघी ने सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा नमस्कार महामंत्र, मंगल-स्तोत्रों के उच्चारण के साथ परिवार जनों की उपस्थिति मे संपादित करवाया।

नामकरण संस्कार

■ **पर्वत पाटीया।** धनराज बैंगानी के सुपुत्र महेंद्र व पुत्रवधु सुमन बैंगानी के प्रांगण में कन्या धन की प्राप्ति हुई जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि द्वारा पारिवारिकजन व समाज की उपस्थिति में संस्कारक पवन कुमार बुच्चा, पवन छाजेड व रवि मालू ने संपादित करवाया।

चातुर्मास में जीवन को दें नई दिशा और दशा

बारडोली।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की महत्ती कृपा से विदुषी साध्वी राकेश कुमारी जी आदि ठाणा-4 ने सन 2025 के चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश किया। मंगल प्रवेश पर स्वागत कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नवकार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल, बारडोली द्वारा प्रस्तुत किया गया।

स्वागत गीत तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत किया गया। स्वागत वक्तव्य सभा अध्यक्ष महावीर दक, महिला मंडल अध्यक्षा धर्मिष्ठा मेहता, तेयुप अध्यक्ष राहुल सामरा एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष सुशील सरणोत द्वारा दिया गया। उपासक पारसमल बाफना एवं सभा के पूर्व अध्यक्ष सुजान सिंह मेहता ने भी अपने विचार अभिव्यक्त किए।

साध्वी मलयविभाजी, साध्वी विपुलयशाजी एवं साध्वी चेतस्वीप्रभाजी द्वारा आध्यात्मिक बुलेटिन प्रस्तुत किया गया, जिसमें चातुर्मास अवधि में किए जाने वाले समस्त करणीय कार्यों का विस्तृत विवरण प्रदान किया गया। साध्वीवृंद ने प्रेरणा देते हुए कहा कि हम ज्ञान, दर्शन, तप और चरित्र के माध्यम से अपने तन-मन को आध्यात्मिक प्रभाव में ढालकर इस जीवन को एक नई दिशा और दशा दे सकते हैं।

साध्वी राकेशकुमारी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम अत्यंत पुण्यशाली हैं जो हमें जैन धर्म, तेरापंथ धर्म और आचार्य श्री महाश्रमण जी जैसे युगपुरुष प्राप्त हुए। चातुर्मास की अवधि कर्म निर्जरा के लिए अत्यंत उपयुक्त अवसर है, जिसका हमें भरपूर लाभ लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि चातुर्मास में जितना संभव हो सके, स्वाध्याय, जप और तप करना चाहिए, जिससे यह मानव भव सार्थक हो सके।

साध्वीवृंद द्वारा एक सुंदर गीतिका का संगान किया गया। साथ ही समस्त श्रावक समाज को चातुर्मासिक आध्यात्मिक उपहार प्रदान करते हुए त्याग एवं तपस्या के लिए प्रेरित किया गया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के MBDD 2.0 उपक्रम के अंतर्गत बैनर का अनावरण भी साध्वीवृंद के सान्निध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का सफल संचालन अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता ने किया।

फ्रेंड्सशिप डे पर हुआ कल्याण मित्र वर्कशॉप आयोजित

सिटीलाईट, सूरत।

साध्वी प्रोफेसर मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में कल्याण मित्र वर्कशॉप का भव्य आयोजन सिटीलाईट तेरापंथ भवन में हुआ।

इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि कल्याण मित्र की अपनी योग्यता होती है, विशेषता होती है। जिंदगी में एक कल्याण मित्र का होना परमावश्यक है, जो सुख-दुःख का सच्चा साथी बन सके। सच्चा मित्र चीनी में पड़ने वाले कीड़े की तरह मात्र मीठा बोलने वाला नहीं, नमक की तरह होता है जिसमें कभी कीड़े नहीं लगते।

साध्वी प्रोफेसर मंगलप्रज्ञा जी ने कहा सच्चा मित्र वह होता है जो अपने मित्र की गोपनीय बात को प्रकट न करे, मर्म का भेदन न करे, बल्कि गुणों का प्रकटीकरण करे।

बुराई को एकांत में कहे और गलतियों का निवारण करे। कैसी भी परिस्थिति हो, मित्र का साथ न छोड़े। स्वार्थ की चेतना से ऊपर बढ़कर सहयोग की भावना से ओतप्रोत बने। श्रम, संयम और अर्थ से अपने मित्र को सहयोग देने वाला वास्तविक मित्र होता है, जो इत्र की तरह अपने मित्र की गुणवत्ता को सुगंध की तरह महका कर अपनी सच्ची मित्रता का इजहार करता है।

कार्यक्रम में साध्वी सुदर्शनप्रभा, साध्वी अतुलयशा, साध्वी चैतन्यप्राभ और साध्वी शौर्यप्रभा ने 'दोस्त कैसा हो' भावों को दर्शाने वाली गीतिका का सह-संगान किया। कार्यक्रम से पूर्व साध्वी राजुलप्रज्ञा जी ने मंगल भावनाओं आदि का प्रयोग करवाया।

साध्वी शौर्यप्रभा जी ने महावीर वाणी का परिषद को श्रवण करवाया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
11 अगस्त - 17 अगस्त, 2025

शासन कल्पतरु कार्यशाला एवं श्रावक सम्मेलन का आयोजन

मैसूर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में तेरापंथ भवन मैसूर में आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी सिद्धप्रभा जी के सान्निध्य में एक दिवसीय शासन कल्पतरु कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। लगभग 9 घंटे तक सुव्यवस्थित रूप से चलने वाली इस कार्यशाला में मैसूर, मंडिया, मलनाड क्षेत्र के 18 गांवों के श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी सिद्धप्रभा जी ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से किया। भिक्षु भजन मंडली द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष नरेंद्र नखत ने शासन कल्पतरु कार्यशाला की उद्घोषणा करते हुए श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया एवं अध्यक्षीय वक्तव्य भी दिया।

साध्वी सिद्धप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'शासन' और 'शास्त्र' दो महत्वपूर्ण शब्द हैं। जितना मूल्य शासन का है, उतना ही शास्त्र का भी है। ढाई अक्षरों का यह शब्द 'शास्त्र' न केवल शासन करने की, बल्कि त्राण देने की भी क्षमता रखता है। कल्पतरु वही कहलाता है जो रक्षा करता है, त्राण देता है। शासन कल्पतरु वह बनता है, जिसमें चतुर्विध धर्मसंघ में निर्मलता, तेजस्विता और गंभीरता का समुचित विकास हो।

साध्वी आस्थाप्रभा जी, साध्वी मलययशा जी एवं साध्वी दीक्षाप्रभा जी ने गीतिकाओं एवं प्रेरक वक्तव्यों के माध्यम से सभी को अनुप्राणित किया। महासभा के पूर्व अध्यक्ष हीरालाल मालू ने कहा कि हमें मन में गांठें नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि गांठ बांधना सरल है, परंतु खोलना कठिन। जीवन में प्रेमभाव आवश्यक है।

कार्यशाला के मुख्य वक्ता राकेश खटेड़ ने अपने प्रभावी वक्तव्य में कहा कि हमें धर्म के मर्म को समझकर उसे जीवन में उतारना चाहिए। महासभा के कर्नाटक प्रभारी प्रकाश लोढ़ा ने तेरापंथ महासभा की विविध गतिविधियों की जानकारी दी और खुले सत्र में जिज्ञासाओं का समाधान किया। कार्यशाला में कई वक्ताओं ने प्रेरणादायक विचार रखे।

तेरापंथ युवक परिषद, मैसूर द्वारा प्रस्तुत तेरापंथ मिलिट्री फोर्स लघुनाटिका विशेष आकर्षण रही, जो तेरापंथ की मर्यादाओं पर आधारित सुंदर, रोचक एवं प्रेरणादायक प्रस्तुति थी। सभा अध्यक्ष प्रकाश दक रॉयल ने स्वागत भाषण में सभी अतिथियों का अभिनंदन किया। विभिन्न सत्रों का संचालन क्रमशः सुरेश पितलिया, महावीर मारू एवं विनोद मुणोत ने किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री दिलीप पितलिया एवं सहमंत्री विकास दक ने किया। कार्यक्रम का सुंदर संयोजन विनोद बुरड़ एवं रमेश नौलखा ने किया। कार्यशाला के मुख्य प्रायोजक प्रकाशचंद रॉयल, केतन कुमार, वेद कुमार एवं वायु कुमार दक (छापली, मैसूर) रहे। कार्यशाला में मैसूर, नंजनगुड, गुंडलपेट, एचडी कोटे, केआर पेट, केआर नगर, श्रीरंगपट्टण, पांडवपुरा, चामराजनगर, चंद्रायपटना, श्रवणबेलगोला, होले नरसीपुर, प्रियापटना, टी नरसीपुर, मंडिया, हासन, चिकमंगलूर सहित 18 गांवों के श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागिता की।

लगभग 200 प्रतिभागियों की उपस्थिति में यह कार्यशाला मंगलपाठ के साथ संपन्न हुई।

शिशु संस्कार परीक्षा में श्रेष्ठ अंक प्राप्त बच्चों का सम्मान

गांधीनगर।

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के अंतर्गत आयोजित शिशु संस्कार परीक्षा में श्रेष्ठ अंक प्राप्त करने वाले बच्चों का सम्मान डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, गांधीनगर में संपन्न हुआ। मुनिश्री ने अपने संबोधन में कहा कि ज्ञानशाला बच्चों के सर्वांगीण विकास का एक सशक्त माध्यम है। यहाँ बच्चों का केवल अंकों से नहीं, बल्कि नियमित उपस्थिति से भी मूल्यांकन किया जाता है। उन्होंने अभिभावकों से आग्रह किया कि वे अपने बच्चों को नियमित रूप से ज्ञानशाला भेजें, जिससे उनमें नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का समुचित विकास हो सके। भिक्षु चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित आचार्य भिक्षु से संबंधित चित्रकला प्रतियोगिता में भी ज्ञानशाला के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तेरापंथ सभा द्वारा कुल 100 बच्चों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, मंत्री विनोद छाजेड़, क्षेत्रीय संयोजिका नीता गादिया, जोन संयोजिका बबीता चोपड़ा, पवन संचेती, सह-संयोजिका अनीता नाहर, पदमा चोपड़ा एवं टीना मांडोत की उपस्थिति रही।

तप समाचार

बालोतरा। साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में पुष्पादेवी गोगड़ ने बारह का तप, श्रवण देवी गोलेछा, सरस्वती बाई श्रीश्रीमाल व संगीता चोपड़ा ने ग्यारह का तप, जितेन्द्र जीरावला, अरविन्द सालेचा, ममता रांका, मंजू मंडोत, उर्मिला बालड़, अनिता रांका, पुनीत रांका ने नौ का तप, पुनीता मांडोत, धनपत भंडारी, सार्दुल लुणिया, पिंकी भंसाली, गौतम गोगड, अमृत बालड़, मूली बाई बालड़, ललित छाजेड ने अठाई का तप किया।

मदुरै। मुनि हिमांशु कुमार जी के सान्निध्य में संगीता देवी अशोक कुमार जीरावला, विनीत श्रवण बोथरा, नैनमल कोठारी ने 11 उपवास, रिंकू पीयूष सकलेचा ने 9 उपवास की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। इससे पूर्व पूजा राहुल कोठारी, कुमारी मनीषा मोहन बोथरा, बबीता अक्षय लोढ़ा, नेहा नितिन दुधेड़िया ने 8 की तपस्या की।

राजराजेश्वरी नगर। साध्वी पुण्ययशाजी के सान्निध्य में रेखा मरोठी ने नौ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

गुवाहाटी। मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी एवं मुनि रमेश कुमार जी के सान्निध्य में दृष्टि तातेड़ ने अठाई की तपस्या की।

जसोल। साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में सरोज देवी तातेड़, संतोष देवी डोसी एवं संपतराज चौपड़ा ने अठाई तप का अनुष्ठान संपन्न किया।

पल्लावरम। मुनि दीपकुमारजी के सान्निध्य में कृतिका सिसोदिया एवं विधि कटारिया ने अठाई की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

आचार्य महाश्रमण मल्टी स्पेशलिटी क्लिनिक का भव्य शुभारंभ

हैदराबाद।

तेरापंथ युवक परिषद हैदराबाद ने 'आचार्य महाश्रमण मल्टी स्पेशलिटी क्लिनिक' का भव्य उद्घाटन किया। यह पहल यशोदा हॉस्पिटल्स और वासन आई केयर (NASG हॉस्पिटल) के सहयोग से, जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसाइटी, डी.वी. कॉलोनी, सिकंदराबाद स्थित तेरापंथ भवन में की गई।

इस अवसर पर चिकित्सा जगत की कई नामचीन हस्तियां, सामाजिक कार्यकर्ता और तेरापंथ समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. साध्वी गवेषणाश्रीजी ठाणा-4 के मंगलपाठ श्रवण के साथ हुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद (अभातेयुप) के सहमंत्री-1 भूपेश कोठारी की अध्यक्षता में जैन संस्कार विधि से क्लिनिक का उद्घाटन संपन्न हुआ। उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में यशोदा सोमाजीगुड़ा के डॉ. कश्यप व्यास की उपस्थिति ने कार्यक्रम को और भी गरिमा प्रदान की।

यह मल्टी स्पेशलिटी क्लिनिक, जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसाइटी के सहयोग से उनके ही परिसर में संचालित होगा, जिसका मुख्य उद्देश्य बहुत ही रियायती दरों पर गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराना है। इस क्लिनिक में प्रतिदिन विभिन्न विशेषज्ञ डॉक्टर उपलब्ध रहेंगे, जिससे रोगियों को विशेषज्ञ परामर्श आसानी से मिल सकेगा। इसी प्रांगण में आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल फार्मेसी स्टोर का भी संचालन हो रहा है।

तेयुप हैदराबाद के अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने अपनी पूरी टीम के साथ सभी आगंतुकों का स्वागत किया। जैन संस्कार विधि से मंगल मंत्रोच्चार के साथ क्लिनिक का पूजन किया गया। संस्कारक ललित लुनिया, जिनेंद्र बैद और राहुल गोलछा ने जैन विधि से पूजन संपन्न करवाया।

आंध्र और तेलंगाना वासन आई केयर के जनरल मैनेजर राहुल सिंह तोमर ने तेरापंथ युवक परिषद द्वारा की गई इस पहल की सराहना की और अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा के साथ समझौता ज्ञापन (MOU) का आदान-प्रदान किया। उन्होंने इस क्लिनिक में सर्वोत्तम सेवाएं प्रदान करने का आश्वासन दिया और साथ ही भारत भर में अपने सभी क्लिनिकों में आगे के उपचार के लिए रियायती दरों की पेशकश का भी वादा किया। डॉ. दिलीप गुडे और डॉ. कश्यप व्यास ने भी तेयुप हैदराबाद द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की और इस अद्भुत पहल के लिए पूरे तेरापंथ समाज को बधाई दी। अभातेयुप के सहमंत्री-1 भूपेश कोठारी ने हैदराबाद शाखा के कार्यकर्ताओं के उत्साह की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए अपने वक्तव्य में कहा कि तेयुप हैदराबाद इस वर्ष अतिसक्रिय शाखाओं में से एक रही है। इस शाखा ने अभातेयुप निर्देशित लगभग सभी आयामों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है और सारे कार्य उत्साह एवं निष्ठा के साथ संपादित किए हैं। अशोक बरमेचा ने परिषद को बधाई देते हुए हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया। जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसाइटी के मुख्य ट्रस्टी मनोज दुगड़ ने भी भविष्य में हरसंभव सहयोग देने का आश्वासन दिया। अशोक हीरावत और हिमांशु बापना ने परिषद के प्रयासों की अनुमोदना करते हुए वर्तमान नेतृत्व को बधाई दी और क्लिनिक में हर संभव सहयोग की भावना जताई।

तेयुप पदाधिकारी अनिल दुगड़, जिनेंद्र सेठिया, जिनेंद्र बैद, सौरभ भंडारी पिछले पाँच महीनों से इस प्रोजेक्ट की संरचना और क्रियान्वयन में सक्रिय रूप से लगे रहे। पदाधिकारी मनीष जैन, विनय नाहटा और आशीष दक ने भी समय-समय पर इस प्रोजेक्ट में सक्रिय सहभागिता निभाई।

तेरापंथ युवक परिषद हैदराबाद ट्रस्ट परिवार का भी इस प्रोजेक्ट में सक्रिय सहयोग रहा, जिसमें मुकेश सुराणा के साथ प्रवीण बेंगाणी और मनोज बोथरा ने अहम भूमिका निभाई।

इस दौरान यश बागरेचा और रोबिन बैद का भी सहयोग रहा। अंत में, मंत्री अनिल दुगड़ ने सभी गणमान्य व्यक्तियों, सहयोगियों और उपस्थित जनसमूह का आभार व्यक्त किया।

'सुदीर्घजीवी' 'शासनश्री' साध्वी बिदामांजी के प्रयाण पर चारित्रात्माओं के उद्गार

सतिवर हिम्मत धारी

● साध्वी उज्ज्वलरेखा ●

सुदीर्घजीवी साध्वी बिदाम ने जीवन नैया तारी।
सतिवर हिम्मत धारी, जावां बार-बार बलिहारी।।

1. सरेवड़ी के चावत कुल में, जन्म लिया सुखकारी,
ग्राम पींपली के दक कुल की, बन गयी बहुवर प्यारी।
भैक्षव गण में तुलसी गुरु से, संयम श्री स्वीकारी।।

2. मेवाड़ी मीरा सम रहती, भक्ति में मतवाली,
इतिहास रचा सुदीर्घजीविता, का गण में गौरवशाली।
वत्सलता की मूरत लगती, शांत, सौम्य मनुहारी।।

3. मंगलमय हो जीवन थांरो, अनशन रो कलश चढायो,
चौरासी वर्षां रो संयम, जीवन सफल बणायो।
सावण शुक्ला एकम दिवसे, प्रस्थान किया मनहारी।।

4. बैंगलूर, हैदराबाद और सूरत स्यूं चल कर आया,
पोता, पड़पोता, जेठूता, भतीजों का परिकर हर्षाया।
मौके का सब लाभ उठाया, खिल गयी अन्तर क्यारी।।

5. कालू में इतिहास रचाया, धन्य बनी यह धरती,
युगों-युगों तक यादें तेरी, जन-जन रहेगी करती।
सहज सरल सूरत तेरी, लगती प्यारी - प्यारी।।

लय - संयममय जीवन हो

बाजे अनशन शहनाई

● साध्वी प्राञ्जलप्रभा ग्रुप ●

शासनश्री बिदामांजी इतिहास रच्यो जयकारी,
भैक्षवगण शासना में बाजे अनशन शहनाई।।

1. शूरा रो पथ है आलो अपनावे किस्मत वालो,
'भाग्योदय' समरांगण में बाजे अनशन शहनाई ।।

2. 'शासनश्री' सुदीर्घजीवी, जीती जीवन री बाजी,
'संयम' रे समरांगण में बाजे अनशन शहनाई ।।

3. ध्रुवयोगों में देखी दृढ़ता, पंचामृत में समरसता,
'वीर्य' रे समरांगण में, बाजे अनशन शहनाई ।।

4. चढ़ता परिणामां स्यूं थे, पंचख्यो संथारो क्षण में,
'भावां' रे समरांगण में, बाजे अनशन शहनाई ।।

5. साध्वी उज्ज्वलरेखा जी, सतियां मिल सेवा साझी,
'सेवा' (निर्जरा) रे समरांगण में, बाजे अनशन शहनाई।।

6. गुरुत्रय किरपा वरदाई, प्रांजल-मन खुशियां छाई,
'समता' रे समरांगण में, बाजे अनशन शहनाई ।।

लय - मंगल है आज तेरे शासन में

❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।
— आचार्य श्री महाश्रमण

कहाँ हो तुम कहो ना

● साध्वी नम्रप्रभा ●

सुदीर्घजीवी साध्वी बिदाम से, जुड़ गया मन का तार।
हुई रवाना झटपट यों तुम, कर पल में पलकार,
कि सब कुछ सूना-सूना, कहाँ हो तुम कहो ना।।

1. चारों दिशा में फैली गुण की परिमल।
संयम की साधना से जीवन निर्मल।
आकर्षक वो व्यक्तित्व तुम्हारा, था मधुरिम व्यवहार ।।

2. उर्वर था मस्तिष्क तेरा, कर में कला थी।
संस्कारों की घूंटी, मुझको पिलाती।
'चएज्ज देहं न हु धम्मसासणं', सूक्त किया साकार ।।

3. निष्ठा गुरु की, गण की, मन में थी गहरी।
जागरुकता पल-पल, आत्मा के प्रहरी ।
वत्सलता की मूरत थी तुम, ना कृपा का पार ।।

4. गुणग्राहकता तेरी, हम अपनाएं।
जो कुछ मिला था तुमसे, भूल न पाएं।
शब्द नहीं, व्यक्त करूँ मैं, कैसे अब आभार ।।

5. अनशन करके मन का, अरमां फला है।
कालू की धरती को मौका मिला है।
इतिहास विलक्षण सतिवर तुमने, सफल किया अवतार ।।

लय - स्वर्ग से सुंदर

तेरी यादें छाई

● साध्वी स्मितप्रभा ●

बीदासर हेम शताब्दी की पुण्यवेला में मेरी दीक्षा आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के कर-कमलों से हुई। दीक्षित हुए तीन ही दिन हुए थे और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने मुझे साध्वी उज्ज्वलरेखा जी को वंदना करवा दी।

मेरे संसार पक्षीय पिताजी श्रद्धानिष्ठ श्रावक देवराज जी ढेलड़िया बहुत खुश थे कि मेरी पुत्री को वयोवृद्धा साध्वी बिदामां जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ है। सुदीर्घजीवी शासनश्री साध्वी बिदामां जी ने मुझे साधु जीवन की हर चर्या को सिखाया — कैसे बैठना, कैसे सोना, कैसे बोलना, कैसे भोजन करना। वे मेरी हर चर्या को सम्यक बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया करती थीं। साध्वी बिदामां जी मेरी दादी मां के समान थीं। वे बहुत बार दूसरे ग्रुप की साध्वियों को बताती रहती थीं कि गुरुदेव ने महती कृपा कर इसे तीन दिन की दीक्षित को ही हमारे साथ भेज दिया। मेरे पर गुरु की महान कृपा है। शैक्ष साध्वियों में संस्कारों का बीजारोपण करने की अच्छी कला थी। वे वात्सल्य की प्रतिमूर्ति थीं। हम सब साध्वियों पर वात्सल्य रस बरसाती रहती थीं।

पिछले कुछ वर्षों में वे काफी अस्वस्थ रहने लग गई थीं। तब से मुझे सीमा कहकर बुलाने लगी थीं। मधुर वाणी, कोमल हृदय, करुणा का भाव उनके दिल में बहता रहता था। वे हमें सीखना, चितारणा आदि की पल-पल प्रेरणा प्रदान करती रहती थीं। 103वें वर्ष के पश्चात उनसे स्वतः स्वाध्याय नहीं होता था। तब से हम साध्वियों से दशवैआलियं, आराधना, चौबीसी, आचारबोध, संस्कारबोध, व्यवहारबोध, तेरापंथ प्रबोध, महाप्रज्ञ प्रबोध आदि का स्वाध्याय श्रवण करती थीं। जब स्वाध्याय की सम्पन्नता हो जाती, सुनाने वाली साध्वी उठने लगती तो वे फरमातीं — 'बाई! बहुत कृपा करी, अब मेरा जीसोरा हो गया।' स्वाध्याय श्रवण से उनकी वेदना गायब हो जाया करती थी।

ऐसी पुण्यात्मा के चरणों में मेरा इन शब्दों से भावार्पण—

भैक्षवगण नन्दनवन की पाई तुमने शीतल छाया।
सुदीर्घजीविता का इतिहास रचाकर यशोध्वज फहराया।।

1. तेरे जीवन का पल-पल था, सत्यम् शिवम् सुन्दरम्,
तुमने इच्छामृत्यु वरी हुआ भाग्योदय से सद्कर्म।
है दिव्य लोक की मूर्त तुमने मंजिल को महकाया।।

2. गांव शहर और विदेशों से भी आते लोग हजार,
मंगलिक तुझ मुख से सुनकर होता हर्ष अपार।
कल्याणी वाणी से तुमने कितनों को सन्मार्ग दिखाया।।

3. अनशन प्रत्याख्यान किया तब, इन्द्रदेव ने मेह बरसाया,
अनशन सम्पन्नता पर भी रिमझिम रिमझिम कर हर्षाया।
बैकुंठ यात्रा और चिता पर दृश्य अनूठा जन-जन चकराया।।

4. दिल में तेरी यादें छाई, भूल तुम्हें न मैं पाऊँ,
इधर उधर में ढूंढ रही पता नहीं मैं कहां जाऊँ।
श्रद्धार्पण करते सतिवर, मेरा मानस मुरझाया।।

जीवन को सफल बनाया

● 'शासनश्री' साध्वी बसन्त प्रभा ●

अनशन की खुशबू फैली, आध्यात्मिक जीवन शैली।
'शासनश्री' बिदामांजी की, दृढ़ता थी बड़ी निराली।
जीवन को सफल बनाया है, आत्मा को चमकाया है।।

1. दुर्लभ मानव जीवन है, वीर प्रभु ने गाया,
भव से नैय्या पार करने, देह को साधन बताया।
अन्तर शक्ति को जगाया, संयम सौरभ से महकाया,
ज्ञान की ज्योति जलाकर, रोम-रोम हरसाया ।।

2. सुदीर्घजीवी बनकर तुमने, कीर्तिमान बनाया,
समता, श्रमता, ममता से आत्म दीप जलाया।
भिक्षु-भिक्षु तुम रटती, भिक्षुमय बन जाती,
भिक्षु की मूरत को ध्याया, सांसों में उसे बसाया ।।

3. देव, गुरु, धर्म का शरणा है, मुख से हरपल कहती,
समता और शान्त भाव से, तन की वेदना को सहती।
मुस्कुराता था चेहरा, गुरु से था नाता गहरा,
भावों की श्रेणी चढ़कर, लक्षित मंजिल को पाया ।।

4. भैक्षव शासन में तुमने, नव इतिहास बनाया,
श्रद्धा, समर्पण भावों से, संघ में नाम कमाया।
हद हिम्मत तुमने धारी, जाते हैं सब बलिहारी,
तेरापंथ संघ चमन को, गुण सुमनों से महकाया ।।

लय - सूरज कब दूर

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
11 अगस्त - 17 अगस्त, 2025

संक्षिप्त खबर

आओ समझो भिक्षु को कार्यशाला आयोजित

यशवंतपुर। आचार्य भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष - भिक्षु चेतना वर्ष में साध्वी सोमयशाजी के सानिध्य में तेरापंथ युवक परिषद, यशवंतपुर द्वारा 'आओ समझो भिक्षु को' कार्यशाला का आयोजन जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा भवन में रात्रिकालीन प्रवचन के समय आयोजित किया गया। जिसमें करीब 25 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। सप्तदिवसीय चली इस कार्यशाला में साध्वी सोमयशाजी के निर्देशन में साध्वी डॉ. सरलयशाजी द्वारा तेरापंथ के इतिहास, आचार्य भिक्षु के जीवन एवं तेरापंथ की स्थापना के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। कार्यशाला का समापन प्रश्नमंच के माध्यम से हुआ, जिसमें सभी प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। प्रश्नमंच में जीतने वाले प्रतिभागियों को तेरापंथ युवक परिषद द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के संयोजक महावीर गन्ना एवं सह-संयोजक मुकेश मुथा का विशेष श्रम रहा।

मासिक प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

सिरियारी। आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी के प्रेक्षाध्यान भवन में मासिक शिविर का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत प्रेक्षा-गीत के सामूहिक संगान से मंगलाचरण के साथ हुई। संस्थान के व्यवस्थापक महावीरसिंह ने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन को टिकाने का आधारभूत तत्त्व भोजन और पानी है, किंतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण है हमारा श्वास-प्रश्वास। भोजन और पानी के बिना कुछ समय तक जीवन संभव है, परंतु श्वास के बिना एक क्षण भी जीवन को बनाए रखना असंभव है।

प्रेक्षाध्यान में श्वास और विश्वास से किए गए प्रयोग अत्यंत प्रभावकारी होते हैं। अतः प्रत्येक साधक को विश्वासपूर्वक अभ्यास करना चाहिए ताकि निश्चित रूप से लाभ प्राप्त हो सके। मुनि धर्मेशकुमारजी ने शिविर का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि साधना का उद्देश्य जीवन में निर्धारित लक्ष्यों की ओर विकास करना है। शिविर में आंतरिक शक्तियों को जागृत कर, शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को संतुलित रखते हुए विभिन्न प्रयोगों से विशेष उपलब्धियां हासिल की जा सकती हैं। इससे व्यक्ति अध्यात्म के क्षेत्र में अधिक प्रगति कर सकता है।

इस अवसर पर संस्थान के बी.के. कल्याणसिंह, श्यामसुंदर, भेराराम सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

जैन विद्या प्रमाणपत्र वितरण एवं प्रेरणा समारोह

राजराजेश्वरी नगर। स्थानीय तेरापंथ भवन में साध्वी पुण्ययशाजी के सान्निध्य में जैन विद्या प्रमाणपत्र वितरण एवं प्रेरणा समारोह आयोजित हुआ। नवकार मंत्र व कन्यामंडल मंगलाचरण से प्रारंभ कार्यक्रम में साध्वीश्री ने युवाओं को जैन विद्या से जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जो युवा अभी तक ज्ञानशाला से नहीं जुड़ पाए हैं, उन्हें जैन विद्या के इस उत्कृष्ट उपक्रम का हिस्सा बनना चाहिए, ताकि वे संयम और जैन धर्म को गहराई से जान सकें। सभाध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और जैन विद्या की केंद्रीय व्यवस्थापिका एवं सह केंद्र व्यवस्थापकाओं के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। व्यवस्थापिका सीमा छाजेड़ ने बताया कि जैन विद्या परीक्षा 6-7 सितम्बर 2025 को होगी और सभी से फॉर्म भरने का आग्रह किया। इस अवसर पर ऑल इंडिया रैंक धारक हिना कोठारी, विज्ञ उपाधि प्राप्त पूर्वी सुराना और अन्य मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। दक्षिण कर्नाटक प्रभारी कंचन छाजेड़ व महिला मंडल अध्यक्षा मंजु बोथरा ने भी जैन विद्या के महत्व पर विचार रखे। कार्यक्रम संचालन सीमा दक ने किया, आभार दीपिका देरासरीया ने व्यक्त किया। समारोह में जैन विद्या परीक्षा के बैनर का अनावरण भी हुआ।

तेयुप की नई पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी पहल

जयपुर।

तेरापंथ युवक परिषद जयपुर ने Jaipur Connect नामक नवोन्मेषी कार्यक्रम आयोजित किया, जिसका उद्देश्य युवाओं को व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक नेटवर्किंग का मंच प्रदान करना था। कार्यक्रम का मूल मंत्र 'Connect, Collaborate, Grow' रहा।

शुभारंभ परामर्शक पन्नालाल पुगलिया, अविनाश नाहर, कल्याण मित्र ओमप्रकाश जैन और शासनसेवी पन्नालाल बैद के प्रेरक विचारों से हुआ। पूर्व अध्यक्षगण राजकुमार बरड़िया, हिम्मत डोसी, प्रदीप डोसी, राजेन्द्र बांठिया, अशोक बैद, मनोज नाहटा, गौतम मेहता, संजीव कोठारी, श्रेयांस बैंगानी, सुरेन्द्र नाहटा, अमित छल्लानी और गौतम बरड़िया ने युवाओं को संगठन से सक्रिय रूप से जुड़ने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में Jaipur Connect Podcast Series का पहला एपिसोड लॉन्च हुआ, जिसमें लक्ष्मी इंडिया फाइनेंस के एमडी दीपक बैद की उद्यमशीलता यात्रा और जीवन संघर्ष पर बातचीत हुई। दीपक बैद परिवार पर आधारित डॉक्यूमेंट्री भी प्रदर्शित की गई।

सुरेन्द्र नाहटा और करण नाहटा ने रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0 के तहत जयपुर में 108 रक्तदान शिविर आयोजित करने की घोषणा की। अध्यक्ष रवि छाजेड़ ने कहा कि 'Your Network is Your Networth' की सोच के साथ यह मंच युवाओं को सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त करेगा। दीपक बैद ने कंपनी की गतिविधियों की जानकारी दी और आगामी IPO लॉन्च की घोषणा की।

मंत्री शरद बड़ड़िया ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह पहल युवाओं के लिए मजबूत नेटवर्क का आधार बनेगी। कार्यक्रम का संचालन श्रेयांस कोठारी और छवि बैंगानी ने किया।

प्रथम लीडरशिप कार्यशाला 'अलाइन' का आयोजन

विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर द्वारा सीपीएस एकेडमी फॉर लीडरशिप एंड एक्सीलेंस के अंतर्गत आयोजित देशभर की प्रथम लीडरशिप कार्यशाला अलाइन का आयोजन साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में अभातेयुप उपाध्यक्ष प्रथम पवन मांडोत की अध्यक्षता में हुआ।

साध्वी संयमलता द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंत्रोच्चार से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में एक सफल लीडर में क्या गुण होने चाहिए उसके बारे में बताया, एवं सभी को साथ में जोड़कर चलने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में विजय गीत का संगान विजय स्वर संगम टीम द्वारा किया गया, श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पवन मांडोत द्वारा किया गया।

तेयुप अध्यक्ष विकास बाँठिया ने सभा, युवक परिषद्, महिला मंडल, प्रोफेशनल फॉर्म, जैन युवा संगठन, अर्हम मित्र मंडल, विजयनगर परिषद व अन्य सभी संघीय संस्थाओं से पधारे हुए पदाधिकारीगण का स्वागत किया।

सीपीएस राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी, मुख्य अतिथि युवा गौरव विमल कटारिया व पवन मांडोत ने कार्यक्रम की महत्ता बताते हुए अपनी शुभकामनायें संप्रेषित की।

तत्पश्चात प्रशिक्षक अरविंद मांडोत व नितिन लुणिया ने विभिन्न सत्रों द्वारा कुशल नेतृत्व क्षमता, समय प्रबंधन, मीटिंग आयोजन, समूह कार्य, निर्णय क्षमता, सफल नेतृत्व के गुणों के बारे मे बताते हुए सभी प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। इस कार्यशाला को सफल बनाने मे तेयुप प्रबंध मंडल से प्रदीप बाबेल, पवन बैद, अमित नाहटा, मनीष चावत, करण मांडोत, पीयूष ललवानी, कमलेश चोपडा व संयोजक विनीत गाँधी, सह संयोजक कार्तिक गुलगुलिया व नितिन श्रीमाल का सराहनीय श्रम रहा। अर्थ सहयोगी मनोहरलाल, राकेश, मुकेश बाबेल परिवार, स्थान सहयोगी अर्हम मित्र मंडल व सभी का आभार मंत्री योगेश पोरवाड़ ने किया।

युवती प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

पूर्वांचल, कोलकाता।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल पूर्वांचल द्वारा भिक्षु विहार में युवती प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 60 युवतियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

शिविर में संबोधित करते हुए मुनि श्री जिनेशकुमार जी ने कहा – विश्व के 12 ख्यात धर्मों में से एक धर्म है जैन धर्म। जैन धर्म विजेताओं का धर्म है। राग-द्वेष के विजेता को 'जिन' कहते हैं, और जिनके द्वारा प्रतिपादित धर्म को जैन धर्म कहा जाता है। जैन धर्म जीने की कला सिखाता है। जीवन में संतुलन आवश्यक है, क्योंकि संतुलन के बिना जीवन का रहस्य समझ में नहीं आता। उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन, जिनशासन और तेरापंथ धर्मसंघ पाकर हमें इसे सफल बनाने के लिए त्याग की चेतना आवश्यक है। आडंबर, प्रदर्शन और दिखावे से दूर रहना चाहिए तथा देव, गुरु और धर्म के प्रति आस्था रखनी चाहिए। प्रवचन श्रवण और स्वाध्याय से ही जीवन का रहस्य समझ में आता है।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा – जीवन में संतुलन के लिए जैन धर्म के सिद्धांतों को समझकर उन्हें अपनाने का प्रयास करना चाहिए।

कार्यक्रम का शुभारंभ काकुडगाछी की युवती बहनों के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत वक्तव्य पूर्व अध्यक्षा श्वेता डाकलिया ने दिया। लेकटाउन जूनियर गोष्ठी की बहनों द्वारा शिक्षाप्रद लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। संचालन एवं अंत में आभार ज्ञापन मंत्री नीता बोथरा ने किया।

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष, वर्षावास स्थापना एवं तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

लूणकरणसर

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी ललितकला जी ने नवकार महामंत्र के उच्चारण से की। इसके पश्चात साध्वीश्री ने 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी' गीत का सामूहिक संगान करवाया। गीत उपरांत, सभी श्रावक-श्राविकाओं से सामूहिक रूप से पाँच मिनट तक 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' का जाप करवाया गया। सभा अध्यक्ष मालचंद नौलखा ने आचार्य भिक्षु के जीवन की प्रेरणादायक घटनाओं को साझा किया। तेयुप अध्यक्ष विकास तातेड़ ने महामना भिक्षु को भावांजलि अर्पित की और मंत्री अमित बोथरा ने 'तेरापंथ रो भाग्य विधाता' गीत का भावपूर्ण संगान किया। साध्वी मंजुलाश्री जी ने बताया कि आचार्य भिक्षु ने अनासक्त जीवन जिया और अपने परम मित्र रामचरण जी के साथ वैराग्य साधना का संकल्प लिया था। उन्होंने यह भी बताया कि आचार्य भिक्षु ने 38,000 पद्य प्रमाण की रचना की थी। प्रेम प्रकाश बैद ने आचार्य भिक्षु की विशेषताओं को उजागर किया।

साध्वी योगप्रभा जी, साध्वी मंजुलाश्री जी एवं साध्वी समृद्धि प्रभा जी ने सामूहिक गीतिका 'मां दीपां थारो लाल कठे' का सुंदर संगान किया। साध्वी ललितकला जी ने अपने उद्बोधन में बताया कि आचार्य भिक्षु के जन्मदिवस को बोधि दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। उन्होंने बताया कि बचपन से ही भीखण जी कुशाग्र बुद्धि के धनी थे और उन्हें कई नामों से पुकारा जाता था जैसे भीखण, भिखू, सांवरिया आदि। उनकी माता ने गर्भकाल में सिंह का स्वप्न देखा था और आचार्य भिक्षु ने भी जीवनभर सिंहवत जीवन जिया। तेरापंथ स्थापना दिवस का शुभारंभ साध्वी योगप्रभा जी और साध्वी समृद्धि प्रभा जी ने मंगलाचरण से किया। उपासिका मोनिका देवी नौलखा ने आचार्य भिक्षु और भगवान महावीर के जीवन में समानताओं की चर्चा की और बताया कि आचार्य भिक्षु ने सभी आगम ग्रंथों का दो बार गहन अध्ययन किया था।

तेरापंथ महिला मंडल की नवमनोनीत अध्यक्ष सरिता चोपड़ा ने अपने भाव प्रस्तुत किए और महिला मंडल की बहनों ने एक नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से आचार्य भिक्षु के जीवन को जीवंत किया। इस कार्यक्रम का संयोजन साध्वी समृद्धिप्रभा जी एवं साध्वी मंजुलाश्री जी ने किया। कार्यक्रम में स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं श्रावक-श्राविका समाज की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

राजलदेसर

तेरापंथ सभा भवन में 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी के सान्निध्य में तेरापंथ स्थापना दिवस कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र उच्चारण से किया गया। धर्म सभा को संबोधित करते हुए साध्वीश्री ने कहा - आषाढ़ी पूर्णिमा का दिन तेरापंथ धर्म संघ के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है। आज का दिन आचार्य भिक्षु के जीवन में नया आलोक भरने वाला दिन था। आचार शुद्धि के लिए उन्होंने बहुत प्रयत्न किया। स्वयं ने शुद्ध आचार का पालन किया और लोगों को शुद्ध आचार से अवगत कराया। तेरापंथ संघ की स्थापना सहज ही हो गई।

तेरापंथ संघ की स्थापना ऐसे शुभ मुहूर्त पर हुई कि यह संघ विकास की ऊंचाइयों को छू रहा है। इस अवसर पर साध्वी कमलयशा जी, साध्वी चैत्यप्रभा जी, साध्वी इंदुयशा जी, साध्वी कीर्तिरेखा जी ने आचार्य भिक्षु के जीवन पर सारगर्भित वक्तव्य व गीत के द्वारा अभिव्यक्ति दी। हुणतमल नाहर, नेहा जैन, पुष्पादेवी सोनी, महिला मंडल ने भी आराध्य के प्रति अभ्यर्थना की। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी स्नेहप्रभाजी ने किया।

उचाना मंडी

तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु का 300वां जन्म दिवस उचाना मंडी, हरियाणा में समणी जयन्त प्रज्ञाजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के बाद समणीजी द्वारा 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी' गीत का संगान किया गया। भिक्षु जाप सहित अन्य आयोजन विधिपूर्वक सम्पन्न हुए।

तेरापंथी सभा अध्यक्ष रामनिवास जैन ने अपने वक्तव्य में कहा कि हम पूज्य गुरुदेव के प्रति कृतज्ञ हैं, जिनकी कृपा से यह ऐतिहासिक आयोजन संभव हो सका। उन्होंने सम्पूर्ण तेरापंथी समाज की ओर से आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धा निवेदित की।

तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष विकास जैन ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ जैसा अनुशासित संघ समाज को प्रदान किया। आचार्य महाश्रमण युवाओं के आदर्श हैं और युवाशक्ति को मार्गदर्शन देने वाले प्रकाशपुंज हैं। उन्होंने कहा कि हम सभी अपने दायित्वों को निभाते हुए संघ और संघपति के प्रति निष्ठा रखें।

महिला मंडल की ओर से मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। समणी जयन्तप्रज्ञाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु सत्य के प्रवक्ता और साक्षात साधक थे। उन्होंने धर्म के क्षेत्र में जो पंथ दिया, वह सत्य की ओर ले जाने वाला मार्ग है। आचार्य भिक्षु का जन्म सत्य, श्रद्धा और ज्ञान की ज्योति को प्रकाशित करने के लिए हुआ।

समणी सन्मतिप्रज्ञाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु स्वयं प्रकाशित हुए दीपक थे और वही दूसरों को प्रकाश दे सकते हैं। उनका जीवन सही ज्ञान, श्रद्धा और तत्व को समझाने की प्रेरणा देता है। रात्रिकालीन भक्ति संध्या में बड़ी संख्या में तेरापंथी एवं अन्य समाज के लोग उपस्थित रहे। दिल्ली से आए संगायक अनुराग बोथरा, करण सुखानी और गौरव बैद ने अपनी मधुर प्रस्तुतियों से वातावरण को भिक्षुमय बना दिया।

ज्ञानशाला के बच्चों ने समणीजी द्वारा लिखित परिसंवादों के माध्यम से आचार्य भिक्षु के जीवन की घटनाओं का प्रभावशाली मंचन किया। अनेक श्रद्धालुओं ने वर्षभर में पांच लाख जप करने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष रामनिवास जैन, मंत्री सतपाल जैन, बुडायन तेयुप अध्यक्ष विकास जैन, मंत्री साहिल जैन, महिला मंडल अध्यक्ष रेखा जैन, हरियाणा प्रादेशिक सभा उपाध्यक्ष सुरेश जैन, उपासक जसपाल जैन, अणुव्रत समिति अध्यक्ष दीपक जैन सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

पडिहारा

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में पडिहारा में आचार्य श्री भिक्षु का 300वां जन्मोत्सव, 268वां बोधि दिवस एवं 266वां तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन भव्य और गरिमामय रूप में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का मंगलाचरण भिक्षु अष्टकम के सुमधुर स्वर लहरियों के साथ प्रभा देवी सुराणा द्वारा किया गया। स्थापना दिवस के अवसर पर मंजु देवी दुगड़ ने मंगलाचरण किया।

साध्वी संघप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य भिक्षु का जन्म सिंह स्वप्न के साथ माता दीपा की कुक्षि से हुआ। वे जीवनभर एक सिंह पुरुष की तरह शिथिलाचार के विरुद्ध सिंह गर्जना करते रहे। जन्म से ही वे अनेक विलक्षण विशेषताओं एवं विशिष्ट लक्षणों के धारक थे, जिसने उन्हें तेरापंथ धर्मसंघ का संस्थापक बनने का गौरव प्रदान किया। उसी दिन उन्हें राजसमन्द में नई बोधि प्राप्त हुई। 266वें स्थापना दिवस के अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि क्रांति का इतिहास बातों से नहीं लिखा जाता, दिए जाते हैं उसके वास्ते जानों के नजराने। कवि की इन मार्मिक पंक्तियों का जीवंत स्वरूप है तेरापंथ की स्थापना का इतिहास। आचार्य भिक्षु की जन्म-जन्म की योग-साधना का फल है तेरापंथ, जो आज्ञा, अनुशासन, आचार निष्ठा, मर्यादा और एक विधान की तेजस्वी परंपरा का सबल संवाहक है।

इस अवसर पर अनेक भावभीनी प्रस्तुतियाँ हुईं। साध्वी सोमश्री जी ने सुमधुर गीतिका द्वारा अपने आराध्य को श्रद्धार्पण करते हुए वातावरण को भिक्षुमय बना दिया। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'सांवरिये री अजब कहानी' और 'प्यारा तेरापंथ, इसकी जग में शान बढ़ाएंगे' जैसी सुंदर गीतिकाएँ प्रस्तुत की गईं। बालोतरा से समागत विमला देवी गोगड़ एवं कलावती देवी चौपड़ा ने स्वर लहरियों में आचार्य भिक्षु की स्तुति की। प्रभा देवी सुराणा, ओजस दुगड़ आदि वक्ताओं ने गीतिका, मुक्तक एवं विविध शैलियों में अपने भाव प्रकट किए। तेरापंथ इनफॉर्मेशन एवं इंट्रोडक्शन कार्यक्रम की प्रस्तुति ज्ञानशाला के बच्चों एवं महिला मंडल द्वारा रोचक एवं शानदार ढंग से दी गई।

ज्ञानशाला के बच्चों ने 'जन्मदिन मनाएं, हम हर्षाएं' एक्शन प्रोग्राम एवं 'बधाई-बधाई दीपांमाता बधाई' कार्यक्रम प्रस्तुत कर सबका मन मोहा। कव्वाली के माध्यम से भी बाल प्रतिभाओं ने भक्ति रस का संचार किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की सराहनीय उपस्थिति रही।

भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी पर गीत

भिक्षु स्वाम महा उपकारी

● साध्वी गुप्तिप्रभा ●

भिक्षु स्वाम महा उपकारी, भिक्षु रा म्हें हां आभारी।
अंतर मन जुड़गी थांस्यू इकतारी।
तेरापंथ शासन री जावां म्हें बलिहारी।
हो भिक्षु ! म्हा भक्तां री थे तो भव स्यूं नैया तारी।।

आत्माराधन करणे खातिर जिनवाणी री लौ लागी।
दृढ संकल्प री शक्ति स्यूं आफत भी भागण लागी।
अनुपम अणगार बणकर करणो आत्मा रो निस्तार है।
सच्चाई री खोज करूंगा सच्चाई विस्तार है।
तड़फ अनूठी मन में जागी, पाऊं जिनवर रूप सागी।
'अप्प दीवो भव' बणणे री करणे लाग्या त्यारी।।
(दुनियां में सुवास देवण लागी तेरापंथ फुलवारी।।)

सूक्ष्म बुद्धि स्यूं आगम पढ़-पढ़ गहरा तार थे खींच्या।
सच्ची श्रद्धान देकर जन-जन रा मन उपवन सींच्या।
शूलां रे पथ ने फूलां री, शय्या सुखकर थे मानी।
हर प्रतिकूलता ने अनुकूलता में थे ढाली,
उद्धरण देता तगड़ा तगड़ा।
मेट्या जन-जन रा थे झगड़ा।
थांरी रहमत स्यूं म्हारी मेहनत टलगी सारी।।

चिंतन रो चातुर्य निरालो साहस सूर वीरां रो।
संघर्ष में अटल हिमालय, धीरज धरती धीरां सो।
थांरी गादी रो प्रभाव, धारी भारी गुण गावे।
थाने आगे राख ई गण री महिमा महकावे।
कुण करपावे थारी होड़।
बणादी राजमार्ग सी रोड़।
नंदन वन में मौज उड़ावां खिलगी तकदीर म्हारी।।

महातपस्वी महाश्रमिक महाश्रमण रो बरतारो।
मुख्यमुनि साध्वीप्रमुखा साध्वीवर्या रो है स्हारो।
हंसतो खिलतो धर्म संघ ओ मर्यादा में चालै है।
भिक्षु थांरे इंगित पर गण गणिवर सारा हालै है।
सात हाथ री सोडां सौवां।
बाटड़ली म्हे थांरी जोवां।
जिन शासन में फैली है इ शासन री महिमा भारी।।

लय - तेरापंथ रो भाग्य विधाता

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
11 अगस्त - 17 अगस्त, 2025

संबोधि

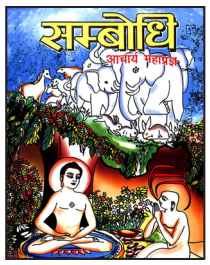

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

१७. वीतरागो भवेल्लोको, वीतरागमनुस्मरन्।
उपासकदशां हित्वा, त्वमुपास्यो भविष्यसि।।

जो पुरुष वीतराग का स्मरण करता है, वह स्वयं वीतराग बन जाता है। वीतराग का स्मरण करने से तू उपासक दशा को छोड़कर स्वयं उपास्य बन जाएगा।

मनुष्य जैसा सोचता है वैसा बन जाता है। भीतर यदि जागरण न हो तो वह सोचना सम्मोहन पैदा कर देता है। आचार्य नागार्जुन के पास एक व्यक्ति मुक्ति के लिए आया। नागार्जुन ने कहा- 'तीन दिन का उपवास करो, नींद मत लो। और सामने खड़ी भैंस को दिखलाकर कहा, बस यही स्मरण करो कि मैं भैस हो गया। वह एकांत गुफा में चला गया। तीन दिन रात यही कहता रहा। भरोसा हो गया कि मैं भैस हो गया। चौथे दिन सुबह नागार्जुन आए और कहा-बाहर जाओ। वह भैस की आवाज में चिल्लाया और कहा-कैसे आऊं बाहर? नागार्जुन ने सिर पकड़कर हिलाया और कहा-भैस हो तुम? सम्मोहन टूट गया।

वीतरागता साध्य है। वीतराग आदर्श है। साधक आदर्श को सतत सामने रखे। राग-द्वेष को जीतकर ही वीतराग बना जा सकता है। वह उसके प्रति सदा जागृत रहे। राग-द्वेष की मुक्ति ही उपासना की स्थिति को उपास्य में परिवर्तित करती है।

१८. इन्द्रियाणि च संयम्य, कृत्वा चित्तस्य निग्रहम्।
संस्पृशन्नात्मनात्मानं, परमात्मा भविष्यसि।।

इन्द्रियों का संयम कर, चित्त का निग्रह कर, आत्मा से आत्मा का स्पर्श कर, इस प्रकार तू परमात्मा बन जाएगा।

परमात्मा होने का राज इस छोटी सी प्रक्रिया में निहित है। प्रत्याहार, प्रतिसंलीनता-यह योग साधना का एक अंग है। इसमें यही सूचित किया है कि इन्द्रिय और मन को बाहर से समेट कर केन्द्र पर ले आओ, जहां से इन्हें शक्ति प्राप्त होती है और उसी के साथ योजित कर दो। धीरे-धीरे इस अभ्यास को बढ़ाते जाओ। एक दिन परमात्मा का स्वर प्रगट हो जाएगा और तुम्हारा स्वर शांत हो जाएगा। जब तक तुम बोलते रहोगे, परमात्मा मौन रहेगा। उसे मुखरित होने का तुमने अवसर ही नहीं दिया। इन्द्रियों और मन की चेतना से जो युति है वही परमात्मा की अभिव्यक्ति का मूल स्रोत है।

१९. यल्लेश्यो म्रियते लोकस्तल्लेश्यश्चोपपद्यते।
तेन प्रतिपलं मेघ ! जागरूकत्वमर्हसि।।

यह जीव जिस लेश्या भावधारा में मरता है उसी लेश्या के अनुरूप गति में उत्पन्न होता है। इसलिए हे मेघ ! तू प्रतिपल आत्मा के प्रति जागरूक बन।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री महेशांजी 'मेहखांजी'(काणाणा) दीक्षा क्रमांक 144

साध्वीश्री ने साध्वी नंदूजी के सिंघाड़े में रहते अनेक तप किए जो इस प्रकार है- 16/1, 21/1, 30/2, 35/1। बाकी तप का विवरण उपलब्ध नहीं है।

- साभार: शासन समुद्र -

श्रमण महावीर

क्रान्ति का सिंहनाद

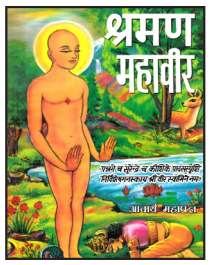

इस विश्व में प्रकाश और तिमिर की भांति सत् और असत् अनादिकाल से है। कोई भी युग केवल प्रकाश का नहीं होता और कोई भी युग केवल अन्धकार का नहीं होता। आज भी प्रकाश है और महावीर के युग में भी अन्धकार था। भगवान् ने मानवीय चेतना की सहस्र रश्मियों को दिग्-दिगंत में फैलने का अवसर दिया। मानस का कोना-कोना आलोक से भर उठा।

भगवान् महावीर ने अहिंसा को समता की भूमिका पर प्रतिष्ठित कर उस युग की चिन्तनधारा को सबसे बड़ी चुनौती दी। अहिंसा का सिद्धान्त श्रमण और वैदिक-दोनों को मान्य था। किन्तु वैदिकों की अहिंसा शास्त्रों पर प्रतिष्ठित थी। उसके साथ विषमता भी चलती थी। उसके घटक तत्त्व भी चलते थे।

१. जातिवाद

विषमता का मुख्य घटक था जन्मना जाति का सिद्धान्त । ब्राह्मण जन्मना श्रेष्ठ माना जाता है और शूद्र जन्मना तुच्छ । इस जातिवाद के विरोध में उन सबने आवाज उठाई जो अध्यात्म-विद्या में निष्णात थे।

बृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य कहते हैं- 'ब्रह्मनिष्ठ साधु ही सच्चा ब्राह्मण है।' किन्तु इस प्रकार के स्वर इतने मंद थे कि जाति वाद के कोलाहल में जनता उन्हें सुन ही नहीं पाई। भगवान् महावीर ने उस स्वर को इतना बलवान् बनाया कि उसकी ध्वनि जन-जन के कानों से टकराने लगी। भगवान् ने कर्मणा जाति के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

भगवान् के शासन में दास, शूद्र और चांडाल जाति के व्यक्ति दीक्षित हुए और उन्हें ब्राह्मणों के समान उच्चता प्राप्त हुई। भगवान् ने अपनी साधु-संस्था को प्रयोगभूमि बनाया। उसमें जातिमद तथा गोत्रमद को निर्मूल करने के प्रयोग किए। आज हमें अचरज हो सकता है कि साधु-संस्था में इस प्रयोग का अर्थ क्या है? किन्तु ढाई हजार वर्ष पुराने युग में अचरज की बात नहीं थी। उस समय यह वास्तविकता थी। बहुत सारे साधु-संन्यासी जाति-गोत्र की उच्चता और नीचता के प्रतिपादन में अपना श्रेय मानते थे। यह विषमता धर्म के मंच से ही पाली-पोसी जाती थी। इसका विरोध भी धर्म के मंच से हो रहा था। भगवान् महावीर ने समता के मंच का नेतृत्व सम्भाल लिया। उनके सशक्त नेतृत्व को पाकर समता का आन्दोलन प्राणवान् हो गया।

भगवान् के संघ में सम्मिलित होने वाले व्यक्ति को सबसे पहले समता (सामायिक) का व्रत स्वीकारना होता, फिर भी कुछ मुनियों के जाति-संस्कार क्षीण नहीं होते। १. एक बार कुछ निर्ग्रन्थ भगवान् के पास आकर बोले- 'भंते ! हम भगवान् के धर्म-शासन में प्रव्रजित हुए हैं। भगवान् ने हमें समता-धर्म में दीक्षित किया है। फिर भी भंते ! हमारे कुछ साथी अपने गोत्र का मद करते हैं और अपने बड़प्पन को बखानते हैं।'

भगवान् ने उस साधु-कुल को आमंत्रित कर कहा-

'आर्यों! तुम प्रव्रजित हो, इसकी तुम्हें स्मृति है?'

'भंते! है।'

'आर्यों! तुम कहां प्रव्रजित हो, इसकी तुम्हें स्मृति है?'

'भंते! है। हम भगवान् के शासन में प्रव्रजित हैं।'

'आर्यों! तुम्हें इसका पता है, मैंने किस धर्म का प्रतिपादन किया?'

'भंते! हमें वह ज्ञात है। भगवान् ने समता-धर्म का प्रतिपादन किया है।'

'आर्यों! समता-धर्म में जाति मद के लिए कोई स्थान है?'

'भंते! नहीं है। पर हमारे पुराने संस्कार अभी छूट नहीं रहे हैं।'

उस समय भगवान् ने उन्हें पथ-दर्शन दिया-

'जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, उग्रपुत्र या लिच्छवि मेरे समता-धर्म में दीक्षित होकर गोत्र का मद करता है, वह लौकिक आचार का सेवन करता है।'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

महावीर की अहिंसा

महावीर की अहिंसा है– '**आयतुलेपयासु**' परम अहिंसक वह होता है जो संसार के सब जीवों के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है, जो सब जीवों को अपने समान समझता है। इस आत्मतुला को जाननेवाला और इसका आचरण करनेवाला ही महावीर की परिभाषा में अहिंसक है। उनकी अहिंसा की परिभाषा में किसी प्राणी का प्राण-वियोजन करना ही हिंसा नहीं है, किसी के प्रति बुरा चिन्तन करना भी हिंसा है।

परम अहिंसक वह होता है जो अपरिग्रही बन जाता है। हिंसा का मूल है परिग्रह। परिग्रह के लिए हिंसा होती है। आज विश्व में परिग्रह की समस्या है। एक महिला जिसके पैरों में सोने के कड़े हैं, उसके पैर काट लिये जाते हैं। एक औरत जिसके कानों में स्वर्ण के कुण्डल हैं, उसके कान काट लिये जाते हैं। ऐसी घटनाएं क्यों घटती हैं? परिग्रह के लिए। परिग्रह में आसक्त व्यक्ति निरपराध प्राणी की भी नृशंस हत्या कर डालता है। एक व्यक्ति धन आदि के प्रलोभन में आकर किसी के कहने से किसी की हत्या कर डालता है। बड़ी-बड़ी डकैतियां और चोरियां होती हैं, इन सब अपराधों का केन्द्र-बिन्दु है-परिग्रह। भगवान महावीर ने दुनिया को अपरिग्रह का संदेश दिया वे स्वयं अकिंचन बने। उन्होंने घर, परिवार राज्य, वैभव सब कुछ छोड़ा, यहां तक कि वे निर्वस्त्र बने। कुछ लोग उन अपरिग्रही महावीर को भी अपने जैसा परिग्रही बना देते हैं। कई जैन मन्दिरों में महावीर की प्रतिमा बहुमूल्य आभूषणों से आभूषित मिलती है। यह महावीर का सही चित्रण नहीं है। हम स्वयं अपरिग्रही न बन सकें तो कम से कम महावीर को तो अपरिग्रही रहने दें, उन्हें तो परिग्रही न बनाएं। भगवान महावीर गृहवासियों के लिए 'इच्छा-परिमाण' अणुव्रत दिया। एक श्रावक अपने परिग्रह को असीम न बनाये, एक सीमा से अधिक परिग्रह को न बढ़ाए।

महावीर की अहिंसा है समता। समता के बिना अहिंसा नहीं सधती। समता का अर्थ है-हर स्थिति में मानसिक संतुलन बनाए रखना। हिंसा का मूल है-राग-द्वेष। समता की भूमिका में ये समाप्त हो जाते हैं। जितना-जितना समता का विकास होता है, उतना-उतना राग-द्वेष का विनाश होता चला जाता है। महावीर का पूरा साधना-काल समता की साधना में बीता। उनके सामने अनुकूल और प्रतिकूल दोनों प्रकार के परिषह उत्पन्न हुए। उन्होंने अपनी सहिष्णुता के द्वारा उन परिषहों को निरस्त किया। उनकी समता की साधना थी–

लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा।
समोनिंदा पसंसासु, तहा माणावमाणओ।।

लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण, निन्दा-प्रशंसा तथा मान-अपमान के द्वन्द्वों में सम रहना।

आगम में कहा– "**सव्वे पाणा ण हंतव्वा, एस धम्मे धुए णिइए सासए।**"

किसी प्राणी की हिंसा न करना, यह अहिंसा धर्म ही सबसे अधिक पुराना है, ध्रुव, नित्य और शाश्वत है।

महावीर की अहिंसा केवल उपदेशात्मक और शब्दात्मक नहीं हैं उन्होंने उस अहिंसा को जीया और फिर अनुभव की वाणी में दुनिया को उपदेश दिया। आज विश्व हिंसा की ज्वाला में झुलस रहा है। अहिंसा के शीतल सलिल से ही संसार को राहत मिल सकती है।

लक्ष्मण रेखाएं

भगवान महावीर ने दो प्रकार की साधना-पद्धति का निरूपण किया। वैयक्तिक और संघबद्ध । वैयक्तिक साधना दुष्कर होती है। इसलिए हर कोई साधक उसे स्वीकार करने में समर्थ नहीं हो सकता। विशिष्ट ज्ञानवान व शक्ति-सम्पन्न साधक गुरु की अनुमति प्राप्त होने पर ही वैयक्तिक साधना पद्धति में प्रवेश कर सकता है। संघबद्ध साधना प्रणाली में विशिष्ट ज्ञानवत्ता का होना अनिवार्य नहीं है। सामान्य तत्ववेत्ता व्यक्ति भी संघीय साधना का पथ स्वीकार कर सकता है।

एकांकी साधना-पद्धति में व्यवस्थागत मर्यादाओं की अपेक्षा नहीं रहती। क्योंकि वहां साधक अकेला होता है, अपनी इच्छानुसार कर सकता है, किसी को कोई तकलीफ नहीं होती। संघीय साधना में साधनागत और व्यवस्थागत दोनों प्रकार की मर्यादाएं आवश्यक होती हैं। भगवान महावीर ने साधुओं के लिए पांच महाव्रतों की व्यवस्था दी और महाव्रतों की सुरक्षा के लिए आठ प्रवचन-माताओं का विधान किया। ये तेरह नियम साधुओं की मूल-भूत साधनागत मर्यादाएं हैं। इन मर्यादाओं का पालन करना दोनों साधना-पद्धतियों में समान रूप से अनिवार्य है।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री छोगालालजी (बोराणा) दीक्षा क्रमांक 388

तपस्या को आत्मशुद्धि का साधन मानकर आपने तप किया। आपके तप का विवरण इस प्रकार है– उपवास/1314, 2/53, 3/11, 4/16, 5/25 तप के कुलदिन 1642, जिनके 4 वर्ष 7 महीने 12 दिन होते है।

– साभार : शासन समुद्र –

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
11 अगस्त - 17 अगस्त, 2025

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

महामना आचार्यश्री भिक्षु

तेरापथ गणिराज की, जन्म त्रि सदी आगाज,
निज भावों से अर्चना, करें प्रभु की आज।
भिक्षु को जानें सभी, पहचानें-मानें,
रचना से अर्पण करें, अंतर्मन आवाज।।

भिक्षु चेतना वर्ष पर आचार्य श्री भिक्षु के दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने का अनुपम अवसर

- आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी के इस ऐतिहासिक अवसर पर आपको आमंत्रण है – अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से तेरापंथ टाइम्स के विशेष अंकों का हिस्सा बनने का।
- आप अपनी मौलिक रचना हमें प्रेषित कर सकते हैं, जो लेख, गीत, कविता या अन्य किसी साहित्यिक विधा में हो सकती है।

रचना हेतु नियम

1. प्रत्येक रचनाकार से केवल एक रचना ही स्वीकार की जाएगी।
2. रचना का आधार आचार्य भिक्षु एवं उनका दर्शन हो।
3. लेख की अधिकतम सीमा लगभग 750 शब्दों तक सीमित हो।
4. गीत/कविता अधिकतम 5 पद्य अथवा 15 पंक्तियों तक ही सीमित रहें।
5. प्राप्त रचनाओं का प्रकाशन भिक्षु चेतना वर्ष के दौरान कभी भी किया जा सकता है।
6. रचना के प्रकाशन का अंतिम निर्णय तेरापंथ टाइम्स संपादक मंडल का होगा।
7. रचना भेजने की अंतिम दिनांक- 31 अगस्त, 2025

रचना भेजने का माध्यम

ईमेल करें : abtyptt@gmail.com या
वॉट्सएप करें : +91 89059 95002

भव्य चातुर्मास प्रवेश एवं विशाल मर्यादा रैली का आयोजन

सिटीलाइट।

महातपस्वी युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की शिष्या प्रो. डॉ. साध्वी मंगलप्रज्ञाजी का सिटीलाइट स्थित तेरापंथ भवन में भव्य चातुर्मास प्रवेश हुआ। साध्वी मंगलप्रज्ञाजी अपनी सहवर्तिनी साध्वियों के साथ देवराज रेजीडेंसी, न्यू सिटीलाइट से विशाल मर्यादा रैली के साथ विहार कर तेरापंथ भवन, सिटीलाइट पधारीं। रैली का आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सूरत द्वारा किया गया था। तेरापंथी सभा के अतिरिक्त युवक परिषद, महिला मंडल, अणुव्रत समिति, उपासक श्रेणी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, कन्या मंडल, किशोर मंडल, ज्ञानशाला के बच्चे एवं बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। साध्वीश्री के स्वागत एवं अभिनंदन के अवसर पर अपने प्रो. डॉ. साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा – आज का अवसर हमारे लिए एक पुण्यप्रभात के समान है, क्योंकि गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमणजी ने हमें सूरत में चातुर्मास करने का आदेश दिया था और आचार्यवर के आदेश की आज संपूर्ति हो रही है, इसकी हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है। सूरत डायमंड नगरी एवं सिल्क सिटी के रूप में प्रसिद्ध है। यहां के श्रावक समुदाय का धर्म के प्रति विशेष लगाव है। आज यहां मर्यादा रैली का आयोजन किया गया। यह रैली कोई साधारण रैली नहीं थी, यह तेरापंथ की आन-बान-शान का प्रतीक है। वर्ष 2003 में आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का ऐतिहासिक चातुर्मास यहां हुआ था और वर्ष 2024 में आचार्य श्री महाश्रमणजी का चातुर्मास यहीं हुआ था। आज हमने चातुर्मास प्रवेश किया है। यह हमारा प्रवेश नहीं है बल्कि गुरु दृष्टि के प्रवेश करने का अवसर है। प्रकृति ने भी आज सुंदर सहयोग किया है। यह तथ्य कि पूरे विहार मार्ग पर बारिश नहीं हुई और तेरापंथ के प्रवेश द्वार पर पहुंचते ही अमी वर्षा हो गई, वास्तव में यह एक शुभ संकेत है।

साध्वीश्री ने आगे कहा कि सूरत शहर को त्याग और तपस्या के माध्यम से और भी खूबसूरत बनाना है। उधना में चातुर्मासार्थ विराजित 'शासनश्री' साध्वी मधुबालाजी ने साध्वी मंगलप्रज्ञाजी के चातुर्मास प्रवेश के अवसर पर अपनी दो साध्वियों को भेजा। इनमें से साध्वी मंजुलयशाजी ने अपने वक्तव्य में कहा – प्रो. डॉ. साध्वी मंगलप्रज्ञाजी विदुषी साध्वीजी हैं। उन्होंने राजस्थान के लाडनूं में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में सेवाएं दी हैं और तेरापंथ की समण श्रेणी की मुख्य नियोजिका के रूप में भी अमूल्य सेवाएं प्रदान की हैं। आशा है कि उनकी उपस्थिति और प्रेरणा यहां श्रोताओं में वैराग्य की भावना पैदा करती रहेगी। उम्मीद है कि सूरत के श्रावक-श्राविकाएं साध्वीश्री की विद्वत्ता और प्रेरक प्रवचनों का अधिकतम लाभ उठाएंगे। साध्वीवृंद द्वारा समूह गायन एवं समूह परिसंवाद की रोचक प्रस्तुति दी गई। महिला मंडल ने मंगलाचरण किया तथा अध्यक्ष हजारीमल भोगर ने स्वागत भाषण दिया। समाज के विभिन्न संगठनों ने साध्वीश्री के स्वागत में अपनी संयुक्त भावाभिव्यक्ति की। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री महेंद्र गांधी मेहता ने किया।

शांतिमय जीवन के लिए है अनुशासन का महत्व

उदयरामसर।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने आज उदयरामसर स्थित श्री शिव प्रताप बजाज महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय में बच्चों को उद्बोधन देते हुए कहा कि ज्ञान बांटने से बढ़ता है। विद्वान का सब जगह सम्मान बढ़ता है। ज्ञान से कभी भार नहीं होता व ज्ञान कभी बेकार नहीं होता। ज्ञान से शांति मिलती है, प्रतिष्ठा बढ़ती है। मुनि श्री ने कहा कि इस स्कूल के बच्चे संस्कारी है। आचार्य श्री तुलसी के कथन 'निज पर शासन फिर अनुशासन' को बताते हुए उन्होने कहा कि शांतिमय जीवन व्यतीत करने के लिए अनुशासन का बहुत महत्व है। प्रत्येक विद्यार्थी अपना जीवन अनुशासनमय व्यतीत करे। किसी भी राष्ट्र का चतुर्दिक विकास अनुशासन पर ही निर्भर है। अनुशासन एवं मर्यादा के द्वारा मानसिक एवं बौद्धिक विकास होता है। भारत देश को राम के देश के नाम से भी जाना जाता है। भगवान राम मर्यादा ओर अनुशासन के पर्याय थे। आचार्य श्री भिक्षु ने भी मर्यादा ओर अनुशासन की अलख जगाने का कार्य किया। मुनि श्री ने बच्चों को जानकारी देते हुए अणुव्रत के नियमों को अपनाने की प्रेरणा प्रदान की। प्राचार्य रतनलाल छलाणी ने स्वागत वक्तव्य देते हुए स्कूल में हुऐ विकास कार्यों की चर्चा की। वरिष्ठ पत्रकार जैन लूणकरण छाजेड़ व तेरापंथी सभा के मंत्री जतन लाल संचेती ने भी अपने विचार रखे।

निःशुल्क मेगा स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

ब्रह्मपुर।

तेयुप एवं तेममं द्वारा बीडीजी रमेश गोयल सेवा संस्थान के सहयोग से गुरुकुल स्कूल (महामृत्युंजय मंदिर), ब्रह्मपुर में एक मेगा स्वास्थ्य जाँच शिविर का सफल आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्देश्य आमजन को सुलभ व किफायती स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना था। शिविर में कुल 202 मरीजों ने विभिन्न स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाया। विशेष रूप से, 65 जरूरतमंदों को निशुल्क चश्मे प्रदान किए गए, जिससे उनकी दृष्टि और जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ। पंजीकरण शुल्क मात्र 10–20 रखा गया था, जिससे सभी वर्गों के लोग लाभान्वित हो सके। शिविर में विशेष सहयोग Lotus मेडिकल बस का रहा, जिसमें सभी आवश्यक उपकरण एवं सुविधाएं उपलब्ध थीं।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम ने देशभर में किया एक साथ नेत्र जांच शिविर 'मिशन दृष्टि' का आयोजन

हैदराबाद

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, हैदराबाद ने वासन आई केयर एवं लायंस क्लब के सहयोग से 'मिशन दृष्टि – मेगा आई कैम्प' का सफल आयोजन किया। इस सेवा अभियान के अंतर्गत हैदराबाद के 7 अलग-अलग स्कूलों में एक ही दिन निःशुल्क नेत्र जांच शिविर लगाए गए। गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल, नल्लागुट्टा, गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल, नल्लागुट्टा, मारवाड़ी हिंदी विद्यालय, नल्लागुट्टा - इन तीनों स्कूल्स के कैम्प का संचालन, विरेन्द्र घोषल, निखिल कोटेचा, वर्षा बैद ने किया। गवर्नमेंट हाई स्कूल, बंदीमेट, गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल, बंदीमेट - इन दो स्कूल्स के कैम्प का संचालन दीक्षा सुराना, नवीन सुराना, ऋषभ दुगर ने किया। गवर्नमेंट हाई स्कूल, रिसाला बाज़ार, बोलारम के कैम्प का संचालन, पंकज संचेती, शिखा सुराना, प्रेरणा सुराना ने किया। सेंट मार्क्स स्कूल, डी.वी. कॉलोनी के कैम्प का संचालन अणुव्रत सुराणा, सुनील पगारिया, डॉ. मोहित सेठिया ने किया।

प्रत्येक केंद्र पर विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम ने स्कूल बच्चों की आंखों की जांच की। लगभग 1400 बच्चों की आंखों की जांच की गई। ज़रूरतमंदों को निःशुल्क चश्मे, और आगे की चिकित्सा परामर्श भी दिया गया। इस अभियान का उद्देश्य नेत्र स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना और समय रहते समस्याओं का निदान करना था। इस आयोजन के संयोजक रहे दीक्षा सुराना एवं नवीन सुराना। TPF हैदराबाद के अध्यक्ष विरेंद्र घोषल, मंत्री निखिल कोटेचा व कोषाध्यक्ष अर्हम बेंगानी ने संपूर्ण टीम के साथ मिलकर इस सेवा कार्य को सफल बनाया। राष्ट्रीय सहमंत्री मोहित बैद की विशेष उपस्थिति रही।

जोधपुर

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, जोधपुर द्वारा शहर के पाँच प्रमुख राजकीय विद्यालयों में नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर भारतवर्ष के लगभग 350 से अधिक शहरों में एक साथ, एक ही दिन, एक ही समय पर आयोजित हुआ, जो एक अद्वितीय राष्ट्रीय सेवा पहल का उदाहरण है। जोधपुर में आयोजित इस शिविर में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चौपासनी, महात्मा गांधी उच्च माध्यमिक विद्यालय सेक्टर 11, महात्मा गांधी उच्च माध्यमिक विद्यालय, लाला लाजपत राय कॉलोनी, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बोरानाडा, तथा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सिवांची गेट शामिल रहे। इन विद्यालयों में कुल 963 विद्यार्थियों की नेत्र जांच की गई। इस आयोजन में शहर के तीन प्रमुख नेत्र चिकित्सालयों — चक्षु चिकित्सा सेवा समिति, एएसजी आई हॉस्पिटल और अपना नेत्रालय— ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया। विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम ने विद्यार्थियों की आंखों की जांच कर प्रारंभिक स्तरपर दृष्टिदोष की पहचान की, जिससे समय रहते उपचार सुनिश्चित हो सके। शिविर को सफल बनाने में नरेश सिंघवी, डॉ. प्रियंका बैद, अनंत मेहता, अंकिता बैद, जिनेंद्र बोथरा, धीरज बेंगानी, निधि सिंघवी, अजित जीरावाला, डॉ. सुधा भंसाली एवं कार्तिक चोपड़ा की सक्रिय भागीदारी रही। इस अभियान की जानकारी देते हुए तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, जोधपुर के अध्यक्ष महेन्द्र मेहता एवं सचिव निखिल मेहता ने बताया कि बच्चों की दृष्टि को सुरक्षित रखना आज की आवश्यकता है। आज के डिजिटल युग में बच्चों का स्क्रीन के साथ संपर्क अत्यधिक बढ़ गया है, जो उनकी आंखों की सेहत पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। इस प्रकार के शिविरों के माध्यम से समय पर समस्या की पहचान कर बच्चों के भविष्य को रोशनी दी जासकती है। भारत सरकार के केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी. आर. पाटिल ने तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की इस पहल की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि यह अभियान केवल स्वास्थ्य सेवा नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का भी हिस्सा है।

बेंगलुरु वेस्ट

टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट द्वारा 'मिशन दृष्टि मेगा आई कैंप' का आयोजन बेंगलुरु के 10 से अधिक स्कूलों में किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों की आँखों से जुड़ी समस्याओं की प्रारंभिक पहचान कर उन्हें समय रहते उचित उपचार उपलब्ध कराना था। मुख्य उद्घाटन समारोह एस एल आर पब्लिक स्कूल, हम्पीनगर में आयोजित किया गया, जहाँ साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में विद्यार्थियों को आई एक्सरसाइज, ब्रेन शार्प एक्सरसाइज एवं अर्हम् ध्वनि साधना का अभ्यास करवाया गया। साध्वीश्री ने बच्चों को देश का भविष्य बताते हुए उन्हें पढ़ाई में मन लगाकर, मोबाइल फोन का अत्यधिक उपयोग न करने का सुझाव दिया।

टीपीएफ के अध्यक्ष ललित बेगानी ने सभी गणमान्य अतिथियों, स्कूल प्रबंधन, डॉक्टर टीम और समाजजन का स्वागत करते हुए मिशन दृष्टि के उद्देश्य और देशभर में चल रहे इस अभियान के बारे में जानकारी दी। टीपीएफ साउथ ज़ोन अध्यक्ष विक्रम कोठारी, टीपीएफ पूर्व अध्यक्ष हितेश गिरिया, डॉ. प्रकाश छाजेड, विजयनगर सभा उपाध्यक्ष भंवरलाल मांडोत, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष विकास बांठिया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा महिमा पटावरी, अनुव्रत समिति अध्यक्ष राजेश चावत सहित अनेक समाजजन की गरिमामयी उपस्थिति रही। टीपीएफ के सचिव कौशल खटेड ने सफल संचालन करते हुए सभी स्कूलों के प्राचार्यों, डॉक्टर टीम और स्वेच्छा से योगदान देने वाले टीपीएफ सदस्यों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर ललित बेगानी, कौशल खटेड, विक्रम कोठारी, डॉ. प्रकाश छाजेड़ एवं संजय चोरडिया ने सभी कैंप स्थलों का दौरा कर स्वयं व्यवस्थाओं का जायजा लिया और इस सेवा कार्य में लगे समस्त लोगों का उत्साहवर्धन किया। सभी स्कूलों और डॉक्टर टीम को स्मृति चिन्ह और जैन पट्ट देकर सम्मानित किया गया।

जलगांव

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम जलगांव द्वारा मिशन दृष्टि अभियान के अंतर्गत मेगा आई चेकअप कैंप आनंदीबाई देशमुख पाठशाला एवं संत मुक्ताबाई प्राथमिक विद्या मंदिर में आयोजित किया गया। टीपीएफ की अध्यक्षा सीए खुशबू बाफना ने कैंप की जानकारी देते हुए कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। इस अभियान का उद्देश्य बच्चों को डिजिटल स्क्रीन और मोबाइल के अत्यधिक उपयोग से होने वाले दुष्परिणामों से अवगत कराना तथा उनकी आँखों की जाँच कर संभावित समस्याओं का समाधान प्रदान करना था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में लोकसभा सांसद स्मिता ताई वाघ, महावीर क्लासेस के संस्थापक नंदलाल गादिया एवं आनंदीबाई देशमुख पाठशाला की प्रेसिडेंट रूता सारंग उपस्थित रहे। उन्होंने बच्चों को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं और टीपीएफ के मिशन दृष्टि की सराहना की। इस शिविर में कांताई नेत्रालय, नेत्रज्योति हॉस्पिटल एवं उनकी टीम का पूर्ण सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कुल 778 बच्चों की आँखों की जाँच की गई।कार्यक्रम की सफलता में विद्यालय के मुख्य प्राध्यापक, टीपीएफ जलगांव के मंत्री निशांत बोथरा एवं संपूर्ण टीम का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। कार्यक्रम में तेरापंथ महासभा के आंचलिक प्रभारी अनिल सांखला, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला छाजेड़, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा विनीता समदरिया आदि ने भी अपनी विशेष उपस्थिति दर्ज की।

नागपुर

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, नागपुर द्वारा मिशन दृष्टि 2025 के अंतर्गत एक मेगा नेत्र जांच शिविर का आयोजन नंदनवन स्थित केशव नगर महाविद्यालय में किया गया। इस नेत्र चिकित्सा शिविर में 400 से अधिक छात्रों की आँखों की जांच की गई, जिसमें कई छात्रों में नेत्र संबंधी बीमारियाँ पाई गईं। करीब 10 नेत्र चिकित्सकों ने इस शिविर में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। जिन बच्चों में आँखों की कमजोरी या अन्य लक्षण पाए गए, उन्हें आगे के उपचार हेतु गवर्नमेंट आयुर्वेद कॉलेज, नागपुर को रेफर किया गया।

शिविर के सफल आयोजन में केशव नगर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. मिलिंद भाकरे, गवर्नमेंट आयुर्वेद कॉलेज नागपुर के डीन डॉ. राजेंद्र सोनकर एवं उनकी विशेषज्ञ टीम का विशेष सहयोग रहा। इस मिशन दृष्टि को सफल बनाने में टीपीएफ नागपुर के मंत्री सीए विवेक पारख, उपाध्यक्ष एडवोकेट शिवाली पुगलिया, सहमंत्री मधु डागा एवं मेडिकल कन्वीनर डॉ. गौतम जोगड़ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त, TPF Futura की सदस्य प्रेक्षा जोगड़ ने वालंटियर के रूप में इस कार्यक्रम में सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

– आचार्य श्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
11 अगस्त - 17 अगस्त, 2025

नवीन टीम को 'नव उत्साह, उमंग, संकल्प' के साथ कार्य करने की दी प्रेरणा

किलपॉक, चेन्नई।

मुनि मोहजीतकुमारजी के सान्निध्य में भिक्षु निलयम, किलपॉक में अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद की 365वीं नवीन इकाई का गठन विधिवत रूप से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र समुच्चारण से हुई, जिसके पश्चात तेयुप सदस्यों ने विजय गीत का संगान किया।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करते हुए महानगरीय परिसीमन के अनुसार किलपॉक तेयुप के गठन की घोषणा की और नवीन शाखा के प्रथम अध्यक्ष के रूप में राकेश डोसी को शपथ दिलाई। अध्यक्षीय वक्तव्य में राकेश डोसी ने युवाओं द्वारा जताए गए विश्वास पर खरा उतरने का आश्वासन देते हुए संघ और संघपति के प्रति समर्पित भाव से कार्य करने की प्रतिबद्धता जताई।

उन्होंने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए उपाध्यक्ष सुयश सुराणा और अरुण परमार, मंत्री सुनील संकलेचा, सहमंत्री अभिषेक नाहर और श्रीमंत दुधोड़िया, कोषाध्यक्ष अक्षुण्ण डागा, संगठन मंत्री गजेंद्र गादिया तथा कार्यसमिति सदस्यों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। मुनि मोहजीतकुमारजी ने कहा कि तेयुप का प्रतीकचिह्न भारतीय संस्कृति के उत्थान का प्रतीक है। सेवा, संस्कार और संगठन के त्रि-आयामों के साथ टीम को नए उत्साह, संकल्प और चेतना के साथ कार्य करते रहना चाहिए। मुनि जयेशकुमारजी ने नवीन शाखा को नई सोच और चिंतन की क्रियान्विति बताते हुए कहा कि सभी सदस्य मधुमास की तरह मधुरता और शांति से दायित्व निभाएं।

इस अवसर पर रमेश डागा ने अभातेयुप के विभिन्न संचालित आयामों की जानकारी दी। किलपॉक सभामंत्री विजय सुराणा, महिला मंडल अध्यक्षा अनीता सुराणा, अमृतवाणी अध्यक्ष ललित दुगड़, महासभा आंचलिक प्रभारी विमल चिप्पड़, चेन्नई महिला मंडल मंत्री हेमलता नाहर, अभातेममं कार्यसमिति सदस्या माला कातरेला, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष स्वरूप चंद दाँती, माणकचंद डोसी, ट्रस्ट कोषाध्यक्ष गौतमचंद समदरिया, चेन्नई तेयुप अध्यक्ष विशाल सुराणा, उत्तर चेन्नई सभा मंत्री देवीलाल हिरण सहित अनेक गणमान्यजनों ने अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं।

कार्यक्रम में अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष गौतमचंद डागा, संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। जैन संस्कार विधि से शपथ विधि का संचालन संस्कारक स्वरूप चंद दाँती ने मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न कराया।

नवीन तेयुप टीम ने साहूकारपेट में विराजित साध्वी उदितयशा ठाणा-4 और पल्लावरम में विराजित मुनि दीपकुमार ठाणा-2 के दर्शन कर मंगल पाथेय प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन विकास सेठिया ने किया और धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सुनील संकलेचा ने प्रस्तुत किया।

शपथ ग्रहण समारोह

पर्वत पटिया। तेरापंथ महिला मंडल पर्वत पाटिया के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुमन बैद एवं उनकी नवगठित टीम का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि के अनुसार सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई, जिसके पश्चात बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के माध्यम से मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष रंजना कोठारी ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए अध्यक्ष सुमन बैद और उनकी टीम को उज्ज्वल कार्यकाल की शुभकामनाएं दीं तथा देव, गुरु और धर्म की साक्षी में सुमन बैद को शपथ दिलाई। इसके पश्चात अध्यक्ष सुमन बैद ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए सभी सदस्यों को शपथ दिलाई। कार्यक्रम के दूसरे चरण में जैन संस्कारक पवन बुच्चा ने मंत्रोच्चार के साथ विधिपूर्वक संस्कार सम्पन्न कराया। महासभा कार्यकारिणी सदस्य, पर्वत पाटिया सभा मंत्री प्रदीप जैन, तेयुप उपाध्यक्ष भरत जैन और रंजना बोकड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए। वर्तमान अध्यक्ष रंजना कोठरी ने नव मनोनीत अध्यक्ष को दायित्व हस्तांतरण किया। मंत्री मधु झाबक ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। संचालन पूर्व अध्यक्ष कुसुम बोथरा द्वारा किया गया।

हैदराबाद। साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद का शपथ ग्रहण समारोह जैन तेरापंथ भवन, डी. वी. कॉलोनी में श्रद्धा, अनुशासन और गरिमामय वातावरण में जैन संस्कार विधि से सम्पन्न हुआ। संस्कारक ललित लूनिया एवं जिनेंद्र बैद ने जैन संस्कार विधि से कार्यक्रम सम्पादित करवाया। पूर्व अध्यक्ष निर्मल दूगड़ ने कार्यक्रम की सराहना की और संस्कारकों का आभार व्यक्त किया। मंगलाचरण से कार्यक्रम का आरंभ हुआ। भिक्षु प्रज्ञा मंडली ने विजय गीत प्रस्तुत किया और सभा अध्यक्ष सुशील संचेती ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। पूर्व अध्यक्ष विमल पुगलिया ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष राहुल गोलछा को शपथ दिलाई।राहुल गोलछा ने अपने संबोधन में कहा कि इस वर्ष सभी को मिलकर नए कीर्तिमान स्थापित करने हैं। साध्वीश्री के चातुर्मास में नित नए कार्यक्रम कर इसे सफल बनाना है। गुरुदेव के आशीर्वाद और समाज के सहयोग से तेयुप हैदराबाद को नई ऊंचाइयों पर ले जाना है। उन्होंने 'एकता में शक्ति है' का संदेश देते हुए सभी से सहयोग की अपील की। राहुल गोलछा ने उपाध्यक्ष पीयूष बरडिया, ललित लूनिया, मंत्री नीरज सुराणा, सहमंत्री मनीष बुच्चा, जिनेंद्र सेठिया, कोषाध्यक्ष नवीन सुराणा, संगठन मंत्री चेतन मरलेचा एवं कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई। किशोर मंडल प्रभारी अरिहंत गुजराणी, सह प्रभारी प्रतीक बंबोली, संयोजक जय पिंचा, सह संयोजक रुद्र बैद, रौनक महर, हिमांशु दूगड़ और दिव्यांश बोथरा ने भी शपथ ली। समारोह में साध्वी श्री ने कहा कि सभी युवा कार्यकर्ता संघ और संघपति के प्रति समर्पित रहें। उन्होंने राहुल गोलछा को ऊर्जावान और सक्रिय कार्यकर्ता बताते हुए प्रेरणा दी। साध्वी मेरूप्रभा जी और साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी मयंकप्रभा जी ने युवाओं को जोश और उत्साह के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी। तेयुप के पूर्व अध्यक्षों, अभातेयुप सदस्य मनीष पटवारी और समाज के गणमान्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन नवीन लूनिया ने किया। मंत्री नीरज सुराणा ने तेयुप द्वारा संचालित आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स, आचार्य महाश्रमण क्लिनिक और तेरापंथ होम्यो क्लिनिक की जानकारी दी और आभार व्यक्त किया।

संगीत प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

पूर्वांचल, कोलकाता।

मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य में चातुर्मासिक कार्यक्रमों के अंतर्गत धार्मिक संगीत प्रतियोगिता 'कौन बनेगा सुरों का सरताज' का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद पूर्वांचल कोलकाता द्वारा भिक्षु विहार में किया गया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक देवेंद्र बैगानी, सुरेंद्र बोथरा और सुधा नाथानी चक्रवर्ती रहे।

इस अवसर पर आशीर्वचन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमारजी ने कहा कि भारतीय व अन्य संस्कृतियों में संगीत का बहुत बड़ा महत्व है। संगीत को पंचम वेद कहा गया है। यह एक प्रकार की आध्यात्मिक चिकित्सा है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपना व्यक्तित्व निखारता है और ऊर्जा प्राप्त करता है। स्वर का अत्यंत महत्व है; जिसके पास कंठ-कला होती है वह श्रोताओं को बांधे रखता है। प्रवचनों में भी संगीत का उपयोग होता है। इस प्रकार की संगीत प्रतियोगिताएं अत्यंत सार्थक हैं, जिनसे समाज की प्रतिभाओं का पता चलता है। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमारजी के मंगल संगान से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथ युवक परिषद पूर्वांचल के अध्यक्ष राजीव बोथरा ने दिया। प्रतियोगिता में आयु सीमा के आधार पर दो वर्ग बनाए गए – 20 से 50 वर्ष के प्रतिभागियों को वर्ग-1 तथा 50 वर्ष से अधिक आयु के प्रतिभागियों को वर्ग-2 में रखा गया। वर्ग-1 में प्रथम स्थान हंसा सुराणा, द्वितीय स्थान पारस बरड़िया, और तृतीय स्थान पूजा दुगड़ ने प्राप्त किया। वर्ग-2 में प्रथम स्थान नरेंद्र बरड़िया, द्वितीय स्थान विकास बोथरा और तृतीय स्थान रानी नौलखा को प्राप्त हुआ। परिणाम की घोषणा निर्णायक देवेंद्र बैगानी द्वारा की गई। इस अवसर पर निर्णायक देवेंद्र बैगानी, सुरेंद्र बोथरा और सुधा नाथानी चक्रवर्ती ने भी सुमधुर प्रस्तुतियां दीं। प्रतियोगिता में विजेताओं और सभी प्रतिभागियों को तेरापंथ युवक परिषद पूर्वांचल, कोलकाता द्वारा पुरस्कृत किया गया। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री सिद्धार्थ दुधोड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन प्रतियोगिता संयोजक नैतिक भादाणी ने किया।

भिक्षु चेतना वर्ष की शुरूआत में नौ रंगी तप अभिनंदन समारोह

राजराजेश्वरी नगर।

महातपस्वी युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी पुण्ययशाजी के सान्निध्य में भिक्षु चेतना वर्ष के शुभारंभ के अवसर पर राजराजेश्वरी नगर में नौ रंगी तप में भाग लेने वाले 91 तपस्वियों का एक समारोह के रूप में तप अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें साध्वी पुण्ययशाजी की सहयोगी साध्वी विनीतयशाजी सहित 21 तपस्वियों ने नौ, आठ, ग्यारह और तेरह की तपस्या के प्रत्याख्यान किये। साध्वी पुण्ययशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा- दो अक्षर का एक छोटा सा शब्द 'तप' है। जिसकी शब्द संरचना जितनी लघु है उसका कार्य उतना ही महान है। भगवान महावीर ने तप को मोक्ष का एक मार्ग बताया है। अणु से भी कई गुणा शक्ति तप में होती है। तपस्या से जन्म-जन्म के कर्म क्षीण हो जाते हैं। नौ रंगी में भाग लेने वाले सभी तपस्वियों ने आत्मबल, मनोबल, गुरुबल से तप में चार चांद लगाए है। तप एक प्रकार की औषध है। अनेकों रोगों का उपचार तप के द्वारा होता है। तप से शारीरिक, मानसिक भावनात्मक एवं आध्यात्मिक सिद्धियां और शक्तियां जागृत होती है।

साध्वी वर्धमानयशाजी के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। भाइयों एवं महिला मंडल की बहनों ने तप अभिनंदन गीत प्रस्तुत किया। महासभा से प्रकाश लोढ़ा, सभा के पूर्व अध्यक्ष कमलसिंह दुगड़, तेयुप अध्यक्ष विक्रम महेर, महिला मंडल अध्यक्ष मंजु बोथरा, संघ संवाद प्रवक्ता जितेन्द्र घोषल एवं तपस्वियों के परिवार वालों आदि ने वक्तव्य एवं गीतिका के द्वारा तप अनुमोदना की।

सभी तपस्वियों का सम्मान अभिनंदन पत्र, जैन पट्ट एवं साहित्य से किया गया। तपस्वियों से संपर्क करने एवं सूची बनाने में जयंती कोठारी एवं पदमा महेर ने समय व श्रम नियोजित किया। तपोमय वातावरण में साध्वी बोधिप्रभा जी ने मंच का संचालन कुशलता से किया। सम्मान समारोह संचालन मंत्री गुलाब बाँठिया ने तथा आभार दिनेश मरोठी ने किया। अच्छी संख्या में श्रावक श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

प्रथम बार 300 घंटा अखंड ॐ भिक्षु-जय भिक्षु का जप अनुष्ठान

कोलकाता।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष शुभारंभ के अवसर पर 300 घंटा अखंड ॐ भिसु-जय भिक्षु का जप अनुष्ठान पूर्वांचल - कोलकाता में भिक्षु विहार डिविनिटी पवेलियन के जप कक्ष में सानंद सम्पन्न हुआ।

मुनिश्री की प्रेरणा से लगभग 13 दिन चले अखंड जप में बृहत्तर कोलकाता को संघीय संस्थाओं के सदस्यों ने जप कक्ष में जप कर प्रथम बार आयोजित हुए जप यज्ञ में अपनी आहुति दी।

इस जप यज्ञ में कुल 1055 श्रावक-श्राविकाओं ने हिस्सा लिया। प्रतिदिन जपकर्ता की गणना के अनुसार 3330 व्यक्तियों ने जप किया। इस जप यज्ञ में 2454 सामायिक हुई। जपकक्ष से निकल रही लयबद्ध मधुर ध्वनि से भिक्षु विहार गुंजायमान बनता रहा। 8 जुलाई को प्रातः 5 बजे से प्रारंभ हुआ जप 20 जुलाई को रात्रि 8.00 बजे सम्पन्न हुआ।

जप सम्पन्नता के समय अवसर पर मुनिवृंद भी जप में शामिल हुए। मुनिश्री के मंगलपाठ के साथ यह ऐतिहासिक जप अनुष्ठान सानंद सम्पन्न हुआ।

इस अनुष्ठान को सफल बनाने में जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा पूर्वांचल कलकत्ता/ ट्रस्ट , तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का महत्वपूर्ण योगदान रहा। साथ बृहत्तर कोलकाता की प्रायः सभी संस्थाओं का भी योगदान रहा।

कषायों के उपशमन से होता है मन में शांति का बीजारोपण

विजयनगर, बैंगलोर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा विजयनगर के तत्वावधान में अर्हम भवन, विजयनगर में साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में वास्तु शास्त्र कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं भिक्षु स्तुति के साथ हुआ। मुख्य वक्ता एवं प्रशिक्षक वास्तु विद् प्रशांत एम. के. ने विषय पर अपनी प्रस्तुति देते हुए बताया कि वास्तु शास्त्र एक प्राचीन पद्धति है, जो हमारे आसपास की नकारात्मक ऊर्जा को घटाकर सकारात्मक ऊर्जा के प्रभाव को बढ़ाती है।

उन्होंने छोटे-छोटे सुझावों के माध्यम से बताया कि किस प्रकार वास्तु विज्ञान द्वारा अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल और आकाश — इन पाँच तत्वों को संतुलित कर हम अपने घर, कार्यस्थल आदि में सकारात्मक ऊर्जा का वातावरण बनाकर कार्यकुशलता, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, रिश्तों में सामंजस्य और आर्थिक समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने उपस्थित भाई-बहनों के प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं का समाधान भी दिया।

साध्वी संयमलता जी ने अपने वक्तव्य में उत्तराध्ययन सूत्र के आधार पर सम्यक्त्व के प्रथम पड़ाव 'शम' के विषय में बताते हुए कहा — जब कषाय क्षीण हो जाते हैं, तब व्यक्ति के मन में शम अर्थात शांति का बीजारोपण होता है। जब तक व्यक्ति के भीतर क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषाय रूपी शल्य विद्यमान रहते हैं, तब तक उसे शांति प्राप्त नहीं हो सकती। इसके लिए कषायों का उपशमन आवश्यक है, जिसमें सबसे प्रथम क्रोध का उपशमन जरूरी है, क्योंकि क्रोध से व्यक्ति अपना विवेक खो देता है। जब कषायों का शमन होता है, तब सम्यकत्व का उद्भव होता है, और यदि एक बार इसका स्पर्श हो जाए, तो जीवन उज्ज्वल बन जाता है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए साध्वी मार्दवश्री जी ने श्रावक-श्राविकाओं को 11 रंगी तप के महायज्ञ में सम्मिलित होने की प्रेरणा दी। साध्वी रौनक प्रभा जी ने ध्यान का प्रयोग करवाते हुए जीवन में त्याग के महत्व को रेखांकित किया।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष मंगल कोचर, मंत्री दिनेश हिंगड़, उपाध्यक्ष बाबूलाल बोथरा, सह मंत्री मनोहर लाल बोहरा, तेयूप अध्यक्ष विकास बांठिया, महिला मंडल अध्यक्ष महिमा पटावरी एवं श्रावक-श्राविकाओं की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही।

कन्या प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

पूर्वांचल, कोलकाता।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी (ठाणा-3) के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल (पूर्वांचल) द्वारा भिक्षु विहार में कन्या प्रशिक्षण शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर का विषय था — 'Scientific Aspects of Jain Dharma' (जैन धर्म के वैज्ञानिक पहलू)। इस शिविर में पूर्वांचल कोलकाता, साउथ कोलकाता, साउथ हावड़ा एवं उत्तर हावड़ा क्षेत्रों की कुल 41 कन्याओं ने भाग लिया। शिविर दो सत्रों में आयोजित हुआ।

प्रथम सत्र में शिविरार्थी कन्याओं को संबोधित करते हुए मुनि श्री जिनेशकुमार जी ने कहा — 'भारतीय समाज में कन्याएं पवित्रता का प्रतीक होती हैं। वे समाज के भविष्य की आधारशिला हैं और त्याग की प्रतिमूर्ति भी। यदि कन्याएं संस्कारी हों, तो पूरा परिवार संस्कारित हो जाता है। जहाँ एक पुत्र एक घर को प्रभावित करता है, वहीं एक पुत्री दो घरों को संवारती है।' उन्होंने आगे कहा, 'जैन धर्म महान है। हम जैन हैं, इसलिए जैन धर्म का अध्ययन आवश्यक है। यह विजेताओं का धर्म है। इसके मूल सिद्धांत— अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह—अत्यंत वैज्ञानिक हैं। जैन धर्म एक दुर्लभ एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला धर्म है। कन्याओं को चाहिए कि वे विलासिता से दूर रहें, सात्विक एवं शालीन जीवन जीएं तथा अपने चरित्र को उज्ज्वल बनाएँ।' '

मुनि श्री परमानंद जी ने इस अवसर पर कहा — 'राग-द्वेष पर विजय पाने वाले को 'जिन' कहा जाता है, और जो जिन द्वारा बताए गए मार्ग पर चलता है, वही 'जैन' कहलाता है। कन्याओं को जैन धर्म की मूलभूत जानकारी अवश्य होनी चाहिए।' कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल (पूर्वांचल) के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण संयोजिका सुश्री मोनिका भादानी ने दिया। पूर्वांचल कन्या मंडल द्वारा एक शिक्षाप्रद नाटिका की प्रस्तुति भी दी गई। द्वितीय सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. लावण्या कोठारी एवं पूर्व संयोजिका दीक्षा पटावरी ने 'जैन धर्म और विज्ञान' के संदर्भ में उपयोगी प्रशिक्षण प्रदान किया। इस अवसर पर ईस्ट ज़ोन कन्वीनर जागृति चौरड़िया एवं अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की सदस्या दिव्या नाहटा ने कन्या मंडल की गतिविधियों व उद्देश्य के संबंध में जानकारी साझा की। सह-संयोजिका खुशबू सुराणा ने आभार ज्ञापन किया तथा कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री नीता बोथरा ने किया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2025 प्रतियोगिता का आयोजन

हावड़ा।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा निर्देशित अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2025 के स्कूल लेवल प्रतियोगिता का आयोजन अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा 2 स्कूलों में किया गया। अणुव्रत गीत के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2025 का यह कार्यक्रम क्षेत्र की हावड़ा हिंदी हाइ स्कूल एवं हावड़ा शिक्षा निकेतन में आयोजित हुई। हावड़ा हिंदी हाइ स्कूल में 85 विद्यार्थियों ने चित्रकला, निबंध, कविता, गायन, भाषण प्रतियोगिता में एवं हावड़ा शिक्षा निकेतन में 50 विद्यार्थियों ने चित्रकला, निबंध, भाषण प्रतियोगिता में हिस्सा लिया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2025 के प्रायोजक अलका 'अमरचन्द' जय दुगड़ (सरदारशहर, उत्तर हावड़ा) के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
11 अगस्त - 17 अगस्त, 2025

शपथ ग्रहण समारोह

संगरूर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की शाखा, संगरूर 2025-2026 के कार्यकाल के नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं उनकी कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रेरणा गीत के साथ किया गया। तत्पश्चात निर्वतमान अध्यक्ष मीना जिंदल ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुशील जैन को शपथ ग्रहण करवाया। सुशील जैन ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की एवं उपस्थित सदस्यों को शपथग्रहण करवाया। इसी के साथ 2024-2025 कार्यकारिणी द्वारा दायित्व हस्तांतरण भी किया गया । साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने पंजाब की बहनों के उज्जवल इतिहास को बताते हुए कहा - हम बहुत सौभाग्यशाली हैं कि हमें मनुष्य जीवन मिला, जैन धर्म एवं तेरापंथ धर्म संघ मिला। तेरापंथ की तेजस्वी, वर्चस्वी आचार्य परंपरा मिली। गुरुदेव श्री तुलसी ने एक नारा दिया 'दोनों हाथ एक साथ'। चार दीवारी में बंद नारी को पुरुष के समकक्ष कार्य करने का दर्जा दिया। आज महिला किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। साध्वीश्री ने प्रेरणा देते हुए कहा कि धर्मसंघ की गतिविधियों को जानकर उसमें अपनी शक्ति का सम्यक नियोजन करें।

चेन्नई। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में महानगरीय परिसीमन के अनुसार किलपाक में अभातेयुप की 365वीं तेरापंथ युवक परिषद इकाई टीम का शपथ ग्रहण जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। नमस्कार महामंत्र के समुच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। महिला मंडल की बहनों ने नवीन टीम के संस्थापक अध्यक्ष राकेश डोसी एवं मंत्री सुनील संकलेचा को तिलक लगाकर अभिनंदन किया। जैन संस्कारक स्वरूपचंद दाँती ने संपूर्ण मंगल मंत्रोच्चार के साथ शपथ ग्रहण विधि सम्पन्न करवाई। मंगल पाठ के पश्चात संस्कारकों, अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा तथा तेयुप चेन्नई के पदाधिकारियों ने नवीन टीम को मंगल भावना पत्रक प्रदान कर शुभकामनाएँ दीं। किलपाक के सभाध्यक्ष अशोक परमार, अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष गौतमचंद डागा, स्थानीय एवं संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण तथा कार्यकर्तागण उपस्थित थे।

नागपुर। तेरापंथ युवक परिषद नागपुर की नवगठित कार्यकारिणी टीम 2025-26 का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि द्वारा अणुव्रत भवन में विधिवत सम्पन्न हुआ। संस्कार विधि का संचालन आनंदमल सेठिया और जतन मालू द्वारा मंत्रोच्चार के साथ किया गया। तेयुप सदस्यों ने विजय गीत का उत्साहपूर्वक गायन किया। नवमनोनीत अध्यक्ष नितेश छाजेड ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। निवर्तमान अध्यक्ष जितेन्द्र सेठिया ने उन्हें अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई। इसके उपरांत, नवनिर्वाचित अध्यक्ष नितेश छाजेड ने संपूर्ण टीम की घोषणा करते हुए उपाध्यक्ष प्रथम महावीर बोथरा, उपाध्यक्ष द्वितीय मोहित बोथरा, मंत्री अंकुर बोरड़, सहमंत्री प्रथम तरुण सेठिया, सहमंत्री द्वितीय नमन पारख, संगठन मंत्री चिराग बेताला, कोषाध्यक्ष विनय आंचलिया एवं कार्यसमिति सदस्यों को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई। तेरापंथ सभा से विकास बुच्चा ने नवमनोनीत अध्यक्ष नितेश छाजेड के उज्जवल कार्यकाल की मंगलकामनाएं संप्रेषित कीं। इस कार्यक्रम में स्थानीय संस्थाओं — तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, तेरापंथ किशोर मंडल एवं ज्ञानशाला के बच्चों की उपस्थिति ने समारोह को सफल एवं विशेष बना दिया। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन विनय आंचलिया और चिराग बेताला ने किया। आभार ज्ञापन तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री अंकुर बोरड़ द्वारा प्रस्तुत किया गया।

वाशी। तेरापंथ महिला मंडल वाशी का शपथ ग्रहण समारोह भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन ट्रस्ट में आयोजित किया गया। तेरापंथ महिला मंडल वाशी के नव निर्वाचित अध्यक्ष श्रीमती स्वीटी जी खाटेंड ने अपनी संपूर्ण टीम के साथ शपथ ग्रहण की। नव निर्वाचित अध्यक्ष स्वीटी खांटेड ने वर्ष 2025 - 27 के कार्य समिति की घोषणा की। अध्यक्षा - स्वीटी खांटेड, मंत्री- प्रीती धोखा, उपाध्यक्ष- मंजू परमार , उपाध्यक्ष- संगीता बापना, सह मंत्री - रंजन हिरण , सह मंत्री- पदमा गादिया, कोषाध्यक्ष- पूनम डागलिया, प्रचार प्रसार मंत्री - दीपिका बाफना , संगठन मंत्री- कैलाश लोढा निवर्तमान अध्यक्ष रेखा कोठारी ने वर्तमान अध्यक्ष को शपथ ग्रहण करवाई। टीम के सभी सदस्य ने शपथ ग्रहण की प्रक्रिया पूरी की। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल कार्यकारिणी सदस्य एवं महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला जी चंडालिया ने सबको अपने-अपने दायित्व के बारे में समझाया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष संगीता जी बापना ने किया। ओम अर्हम की ध्वनि से 65 की उपस्थिति में शपथ ग्रहण समारोह संपन्न हुआ।

संकल्प बल एवं आत्मबल से ही होती है तपस्याएं

बीदासर।

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में 2 पचरंगी की तपस्या सानन्द सम्पन्न हुई। इस तपस्या में 55 भाई-बहनों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा बीदासर की ओर से तपस्वियों का तप अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ।

कार्यक्रम का प्रारम्भ साध्वी मानसप्रभा जी के मंगल गीत से हुआ। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष संपतमल बैद ने सभी तपस्वियों के प्रति हार्दिक मंगलकामना एवं तप की अनुमोदना की। साध्वी मंजुयशाजी ने तपस्या की अनुमोदना करते हुए अपने वक्तव्य में कहा— बीदासर की भूमि वीर भूमि है, तपोभूमि है। यहां कण-कण में शौर्य भरा हुआ है, साहस भरा हुआ है। यह मघवागणी की जन्मभूमि है, इसे तपोभूमि भी कहते हैं। आज पचरंगी तप सानन्द सम्पन्न होने जा रहा है। भाई-बहनों का उत्साह क़ाबिले तारीफ़ है। तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, कन्यामंडल, अणुव्रत समिति, ज्ञानशाला आदि के वृद्धों से लेकर बच्चों तक सभी ने इसमें भाग लेकर इस पचरंगी तप को पूर्ण सफल बनाया। उन्होंने सबके उत्साह को बढ़ाते हुए सबको तप में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

'शासनश्री' साध्वी अमितप्रभा जी ने कहा— हमारी आत्मा में अनंत शक्ति है, अनंत आनंद है, अनंत ऊर्जा है; परंतु उसे जागृत करने की अपेक्षा है। हर भाई-बहन अपनी संकल्प शक्ति, आत्मशक्ति को जगाए और अधिक से अधिक आध्यात्मिक आराधना के साथ यथाशक्ति तप की आराधना कर कर्मों की निर्जरा करें।

इस अवसर पर साध्वी वीरप्रभा जी ने तपस्या के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए तपस्वियों के प्रति हार्दिक अनुमोदना की।

तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष पारस वैद, नवदीप बैगानी, चिराग बैगानी; तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री सीमा दुगड़, पूर्व मंत्री भावना दुगड़; अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष महावीर वैद; साध्वी विमलप्रभा जी आदि सभी ने गीत, मुक्तक, कविता व भाषण के द्वारा अपने-अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

इस तपस्या में ज्ञानशाला के बच्चे— माही बैगानी (9 वर्ष), सुश्री राशि वैद (12 वर्ष), रिशिका बाईनिया (13 वर्ष) एवं अनंत दुगड़ (12 वर्ष) — इतनी छोटी उम्र में भी दृढ़ संकल्प के साथ तपस्या में सहयोजी बने।

साध्वीश्री जी ने कहा— जहां गुरु की कृपा होती है, उनके शुभ आशीर्वाद से ही हर कार्य पूर्ण सफलता पूर्वक सानन्द सम्पन्न होता है। साध्वीश्री जी ने संघीय उदाहरण देकर बड़ी सरलता से गुरु का महत्व एवं तप का महत्व बताया। साध्वी स्तुतिप्रभा जी ने अपने मधुर गीत से पूरी धर्म परिषद को मंत्रमुग्ध कर दिया। साध्वी समूह ने प्रेरणादायी अनुमोदन गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी चिन्मयप्रभा जी ने किया। भाई-बहनों की उपस्थिति सराहनीय रही। मंगलपाठ से कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

कल्प विद्या अनुष्ठान का आयोजन

गुवाहाटी।

मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी एवं मुनि रमेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के तत्वावधान में तेरापंथ धर्मस्थल में सक्कथुई (णमोत्थुणं) कल्प विद्या अनुष्ठान का आयोजन किया गया।

इस अनुष्ठान में सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया और मंत्रों का सस्वर जाप किया। मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आत्मशुद्धि और भावशुद्धि जप के मूल लक्ष्य हैं। यह मंत्र जाप मनोबल बढ़ाने, रोग निवारण और मानसिक शांति प्राप्त करने के लिए अत्यंत प्रभावकारी है। उन्होंने उपस्थित जनसमूह से यह भावना प्रकट करवाई —'मेरी साधना सफल हो, मेरे अशुभ कर्मों का क्षय हो, मेरे शुभ कर्मों का उदय हो, मैं साधना आत्मशुद्धि के लिए जप कर रहा हूँ।' इन भावनाओं का तीन-तीन बार उच्चारण करवाने के पश्चात उन्होंने लगभग दो घंटे तक संपूर्ण बीज मंत्रों का सस्वर पाठ करवाया।

मुनि रमेश कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जप का जीवन में अत्यंत महत्व है। इससे मन एकाग्र होता है और बड़े से बड़े कार्य संभव हो सकते हैं। जप-तप की आराधना से आध्यात्मिक जीवन का विकास होता है तथा समस्त विघ्न-बाधाएँ दूर होती हैं।

उन्होंने कहा कि णमोत्थुणं एक जैन स्तोत्र है। यह उस समय का स्मरण कराता है जब शक्रेन्द्र तीर्थंकरों के कल्याणक के अवसर पर अपने आसन से उठकर वंदना करता है, इसलिए इसे शक्र स्तुति भी कहा जाता है।

सभा अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा एवं मंत्री राजकुमार बैद ने इस आयोजन में 700 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं एवं समाजबंधुओं की सहभागिता के लिए सभी को साधुवाद प्रेषित किया।

दो दिवसीय साइटिका कार्यशाला का आयोजन

नागपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशानुसार तेरापंथ युवक परिषद् नागपुर ने फिट युवा हिट युवा के अंतर्गत दो दिवसीय साइटिका कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की गई। योगा ट्रेनर श्रेयांश मरोठी का अमूल्य मार्गदर्शन रहा। उन्होंने बताया कि सही योग और सजगता से शरीर की पीड़ा पर विजय पाई जा सकती है। कार्यक्रम में डॉ रमेश ने साइटिका जैसी बीमारी से लड़ने के लिए छोटे -छोटे टिप्स की जानकारी दी। तेयुप अध्यक्ष नितेश छाजेड, तेरापंथ सभा से जतन मालू, कार्यक्रम के संयोजक अंकित बोरड़, खुशयोग परिवार की टीम एवं अन्य गणमान्य सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही।

जागतिक समाधान में अचूक रामबाण है अणुव्रत

चेन्नई।

अणुव्रत समिति चेन्नई की नवगठित टीम का शपथ ग्रहण समारोह साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, साहूकारपेट में समायोजित हुआ।

अणुव्रत समिति की महिला सदस्याओं द्वारा अणुव्रत गीत मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। निवर्तमान अध्यक्ष ललित आंचलिया ने नवमनोनीत अध्यक्ष एवं टीम को शुभकामनाओं के साथ शपथ दिलाई।

डॉ. कमलेश नाहर ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया, जिसे सभागार में उपस्थित जनमेदनी ने दोहराया। प्रेरणा प्रदान करते हुए साध्वी उदितयशाजी ने कहा कि संभव हो तो व्यक्ति महाव्रती बने। पर सभी अणुव्रती तो जरूर बने। गणाधिपति पूज्य गुरुदेव तुलसी ने जन-जन के मानस में नैतिक चेतना के जागरण के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। साधु-संतों ने पांव-पांव पदयात्रा कर जनमानस को आंदोलित किया।

अणुव्रत हर जागतिक समस्या समाधान में अचूक रामबाण है। आज नवगठित अणुव्रत टीम ने शपथ ग्रहण की है, उसके प्रति आध्यात्मिक शुभकामना। चेन्नई की सभी संस्थाएँ भी मिलकर कर अणुव्रत के कार्य को आगे बढ़ाए।

साध्वी संगीतप्रभाजी ने कहा कि अणुव्रत संयम और त्याग के मार्ग पर गतिशील होने की आचार संहिता है। नवमनोनीत अध्यक्षा सुभद्रा लुणावत ने स्वागत स्वर प्रस्तुत करते हुए करणीय कार्य की योजना प्रस्तुत करते हुए अपनी टीम में उपाध्यक्ष वरिष्ठ- दिलीप धींग, उपाध्यक्ष कनिष्ठ- स्वरूप चन्द दाँती, मंत्री- कुशल बाँठिया, सहमंत्री- कमल सामसुखा, सहमंत्री- प्रदीप चोरड़िया, कोषाध्यक्ष- ममता बुच्छा , प्रचार प्रसार मंत्री- शांति दुधोड़िया को शामिल किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन अरिहंत बोथरा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री कुशल बाँठिया ने दिया।

इस अवसर पर सभी संघीय, स्थानीय संस्थाओं के पदाधिकारीगणों ने उपस्थित रह शुभकामना सम्प्रेषित की। प्रवचन पश्चात अणुव्रत समिति टीम ने किलपॉक में विराजित मुनि मोहजीतकुमार ठाणा 3 और पल्लावरम में विराजित मुनि दीपकुमार ठाणा 2 के दर्शन कर पाथेय प्राप्त किया।

पृष्ठ 1 का शेष

अध्यात्म का मार्ग...

इसलिए साधु इसे स्वीकार कर लेते हैं। छोटी उम्र में साधुपना ग्रहण कर अंतिम सांस तक उसका पालन करना महान सफलता है।

गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी एक सीमा तक संयम की साधना करनी चाहिए। श्रावक के लिए बारह व्रत हैं, वे हर कोई न ले पाए तो कुछ संयम का पालन करें। प्रतिदिन नवकार मंत्र की माला या कम से कम 21 बार जप करें। बच्चों में भी यह संस्कार विकसित हो। प्रतिदिन सामायिक करें, संभव न हो तो प्रत्येक शनिवार सायं 7 से 8 बजे सामायिक करने का प्रयास करें। गृहस्थ कार्य करते हुए भी धार्मिक कार्यों के लिए समय निकालें। नशीली चीजों के सेवन से बचें। हॉस्टल और होटल में यदि भोजन नॉनवेज हो तो उससे बचने की जागरूकता रखें। दवाओं में भी नॉनवेज तत्व से बचें। व्यापार और लेन-देन में ईमानदारी का प्रयास करें।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त साध्वीवर्या श्री सम्बुद्धयशाजी ने समुपस्थित जनता को उद्बोधित किया। आचार्यश्री ने अनेक तपस्वियों को उनकी धारणा के अनुसार तपस्या का प्रत्याख्यान कराया। मुनि मदनकुमारजी ने नवरंगी तपस्या के संदर्भ में जानकारी व प्रेरणा प्रदान की। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित द्विदिवसीय 'तेरापंथ ग्लोबल समिट' में उपस्थित अप्रवासी भारतीयों के साथ पधारे दुबई ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी। आचार्यश्री ने उन बच्चों को मंगल आशीष और प्रेरणा प्रदान की। लन्दन से सम्मेलन में समागत जीतूभाई ढेलड़िया व सुनील दूगड़ ने अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

साधना में बाधक है...

आप सभी जिस प्रकार मुझे मान-सम्मान देते थे, इसे भी वैसा ही मान-सम्मान देना। शिष्य को भी संघ की सार-संभाल हेतु निर्देश दें। आचार्य भिक्षु ने कहा है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, पंचम अर में अकेला घूमना ठीक नहीं है, एकाकी साधना अर्हता वर्तमान में कठिन है। वर्तमान में हमारे धर्मसंघ में संघबद्ध साधना का ही क्रम चलता है। संघबद्ध साधना में वृद्धों, रूग्णों, बाल मुनियों की सेवा का कार्य भी हो सकता है, इसलिए शरीर भी सक्षम होना चाहिए और साधना भी अच्छी चले। इसके लिए 'आयारो' में कहा गया है कि 'मांस और रक्त का विवेक करो, मांस और रक्त का उपचय मत करो। इतना उपचय मत करो कि तुम्हारी साधना में विकृति आ जाए।' शरीर स्वस्थ रहे और साधनानुकूल रहे, इसके लिए भोजन पर ध्यान देना चाहिए। साधु और गृहस्थ, दोनों के लिए भोजन पर ध्यान देना लाभदायक होता है। कठिनाई उस समय हो जाती है कि कई बार आदमी स्वाद के लिए खाता है, शरीर को जरूरत नहीं होती। स्वाद के लिए खाना, आसक्ति के लिए खाना परित्याज्य है। शरीर को जो अपेक्षा है, उसके लिए अनासक्त भाव से खाना चाहिए। खाने में उम्र का भी ध्यान रखना चाहिए। खाने में असंयम से शरीर में तकलीफ हो सकती है और साधना में भी तकलीफ हो सकती है। खाने में ऊनोदरी रखें। ऊनोदरी साधना और स्वास्थ्य, दोनों दृष्टियों से उपयोगी प्रतीत हो रही है। कम खाना, गम खाना, नम जाना। कम खाओ - स्वस्थ रहो, गम खाओ - मस्त रहो, और नम जाओ - प्रशस्त रहो। विगय वर्जन की बात भी आती है। छः विगय में से प्रतिदिन कुछ विगय को छोड़ने का प्रयास करें। विगय छोड़ना स्वास्थ्य और साधना, दोनों के लिए अच्छा है। गृहस्थ जीवन में भी खाने का संयम रहे। तपस्या आदि से यथासंभव संयम होता रहे। हमारी साधना में भी शरीर सहायक रह सके और शरीर का उपयोग भी हम अच्छा कर सकें। दोनों दृष्टियों को ध्यान में रखकर भोजन के संयम पर ध्यान देना चाहिए।

मंगल प्रवचन के उपरांत आचार्य प्रवर ने तेरापंथ प्रबोध के आख्यान का वाचन करवाया। शांतिलाल चोरड़िया ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी किया।

बोलती किताब

आभामंडल

जो व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को उदात्त करना चाहता है, अच्छा बनाना चाहता है तो वह सबसे पहले अपने मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण करेगा, उनको वश में रखेगा। समाज में रहने वाला कोई भी व्यक्ति, जिसका इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं होता, मन पर नियंत्रण नहीं होता, वह समाज में प्रतिष्ठित नहीं होता, इसलिए वह सबसे पहले मन और इन्द्रियों पर एक सीमा तक नियंत्रण करता है। समाज में जो व्यक्ति ऊंचे आसन पर हैं, उनके लिए नियंत्रण करना और अधिक जरूरी हो जाता है, इसीलिए राजनीति के आचार्यों ने कहा —जो बड़ा नेता होना चाहे, वह सबसे पहले अपने पर नियंत्रण करे। अपनी इन्द्रियों पर काबू रखे।

प्रश्न है कि भीतर से संक्लेश का प्रवाह क्यों आता है? असंक्लेश का प्रवाह क्यों आता है? कभी संक्लेश का प्रवाह और कभी असंक्लेश का प्रवाह—ऐसा क्यों होता है ? इस प्रश्न का उत्तर हमें पाना है। एक बड़ा बांध है। उसके दरवाजे हैं। दरवाजा खोलते हैं तो पानी बाहर बहने लगता है। दरवाजे को बंद रखते हैं तो पानी बांध से बाहर नहीं जाता, भीतर ही रहता है। इसी प्रकार जब हम संक्लेश के दरवाजे को खोलते हैं तो संक्लेश का प्रवाह बाहर आने लग जाता है और जब हम असंक्लेश के दरवाजे को खोलते हैं तो असंक्लेश का प्रवाह बाहर आने लग जाता है।

शरीर इसलिए प्रधान है कि बाहर से जो भीतर जाता है, वह भी काया के द्वारा जाता है और भीतर से जो बाहर जाता है, वह भी काया के द्वारा जाता है। यह शरीर भीतर और बाहर जाने का माध्यम है। भीतर दो महासागर हैं—एक है अंतर्जगत और दूसरा है बाह्य जगत। क्या ये दोनों भीतर ही जन्मे हैं? नहीं, ये बाहर से भीतर गए हैं।सारी नदियों का पानी बाहर से भीतर गया है और धीरे-धीरे महासागर बन गए। भीतर जाने का माध्यम था शरीर। शरीर ने आसवों को अपने में समाहित किया और इतना लंबा समय बीत गया कि वह पानी एकत्रित होते-होते महासागर के रूप में परिणत हो गया।

कई बार हम कह देते हैं कि में यह कहना तो नहीं चाहता था, पर वाणी से निकल गया। यह वाणी तंत्र के स्वतंत्र अस्तित्व का द्योतक है। हमने जिस स्थिति में वाणी को जैसा अभ्यास दे दिया, उस प्रकार की घटना घटित हो जाती है। क्रोध उभरा और आपके न चाहने पर भी वैसे शब्द निकल जाएंगे, जो अप्रिय होते हैं। कभी-कभी मन के न चाहने पर भी अघटित हो जाता है। यदि मन ही सबकुछ होता तो ऐसा कभी नहीं हो सकता। यदि मन का एकछत्र साम्राज्य होता तो उसके विपरीत कुछ भी नहीं हो पाता, पर ऐसा नहीं है। मन का, वाणी का और शरीर का अपना-अपना स्वतंत्र तंत्र है। प्राण-शक्तियां दस हैं। उनमें एक है मन:प्राण-शक्ति। यह एक किरण है, रश्मि है। जैसे मन की प्राण-शक्ति है, वैसे ही वाणी की प्राण-शक्ति है और शरीर की प्राण-शक्ति है। किसी एक को अतिरिक्त मूल्य नहीं दिया जा सकता। भीतर से जो आता है, वह सबसे पहले नाड़ी-संस्थान में उतरता है। एक बात और है। मन अकेला कुछ नहीं कर सकता। मन की क्रिया तब होती है जब उसे मस्तिष्क का सहयोग मिलता है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

फैमिली सिंगिंग कम्पीटिशन का आयोजन

उदयपुर।

तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा साध्वी त्रिशलाकुमारी जी के सान्निध्य में फैमिली सिंगिंग प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 15 परिवारों ने सह-युगल, माँ-बेटी, पिता-पुत्री आदि विविध रूपों में भाग लेकर कार्यक्रम को संगीतमय और भावविभोर बना दिया। सभी प्रस्तुतियाँ अत्यंत सराहनीय रहीं। निर्णायकद्वय कल्पना जैन एवं रेणु बांठिया द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर तीन समूहों का चयन किया गया, जिन्हें तेरापंथ युवक परिषद द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया। प्रथम पुरस्कार संजय सिंघवी एवं कु. हिया सिंघवी को प्रदान किया गया। द्वितीय पुरस्कार प्रेक्षा बोहरा एवं हर्षल बोहरा को प्राप्त हुआ। तृतीय पुरस्कार सीमा कच्छारा एवं कु. निष्ठा कच्छारा को प्रदान किया गया।

तेरापंथ युवक परिषद के पदाधिकारीगण एवं युवाओं के साथ-साथ सभा, महिला मंडल, अणुव्रत सेवा समिति, किशोर मंडल सहित संघीय संस्थाओं के अनेक गणमान्यजनों की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन संयोजक गौरव लोढा ने किया तथा आभार ज्ञापन तेयुप के संगठन मंत्री आशीष बोहरा द्वारा किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
11 अगस्त - 17 अगस्त, 2025

भाव, नीति और कार्य हों निर्मल : आचार्य श्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
29 जुलाई, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जीव के कर्म बंधते हैं। जैन शास्त्रों में आठ कर्म प्रसिद्ध हैं। शास्त्र में बताया गया है कि पाप कर्म करने वाला जीव नरक में पैदा होता है। नरक में भी तरतम्यता होती है।

सभी जीव प्रगाढ़ वेदना को भोगें यह आवश्यक नहीं है। कोई ज्यादा दुःख पाता है तो कोई कम दुःख पाता है। सात प्रकार के नरक बताए गए हैं। देवगति में भी अनेक प्रकार के भेद होते हैं। उनके आयुष्य में अंतर होता है। नरक और देवगति के जीवों में अनेक समानताएं भी होती हैं। नरक हो या देवगति, जघन्य आयुष्य समुच्चय रूप में दस हजार वर्ष का होता है। उत्कृष्ट आयुष्य भी दोनों गतियों में तैंतीस सागरोपम का होता है। दोनों ही गतियों में वैक्रिय शरीर होता है। नरक का जीव आयुष्य पूरा करके नरक में पैदा नहीं होता, इसी प्रकार देवगति का जीव भी आयुष्य पूरा होने के बाद देवगति में पैदा नहीं होता। दोनों ही गतियों से च्युत होने वाले जीव मनुष्य या तिर्यंच योनि में जा सकते हैं। देवगति और नरकगति, दोनों से निकलने वाला जीव मनुष्य बनकर तीर्थंकर बन सकता है।

'आयारो' आगम में बताया गया है कि नरक में जाने वाले जीव प्रगाढ़ निष्ठुर वेदना को भोगने वाले हो सकते हैं। उसी प्रकार स्वर्ग की प्राप्ति में भी प्रगाढ़ रूप से अच्छे कर्म होते हैं तो उसका अच्छा फल मिल सकता है। जिन प्राणियों के मन नहीं होता, अर्थात असंज्ञी प्राणी, वे ज्यादा पाप नहीं कर सकते तो वे मरकर खराब गति में नहीं जा सकते और ज्यादा अच्छे कार्य करके अच्छी गति को भी प्राप्त नहीं कर सकते। जिस प्राणी के पास मन की शक्ति होती है, वह सबसे निकृष्ट गति में भी पैदा हो सकता है और सर्वोत्कृष्ट गति को भी प्राप्त कर सकता है।

अतः व्यक्ति को अपने भाव, अध्यवसाय को अच्छा रखने का प्रयास करना चाहिए। एक डॉक्टर और डाकू दोनों पेट चीरते हैं, लेकिन दोनों के विचारों में अंतर होता है। डॉक्टर रोगी के रोग निवारण के लिए ऐसा करता है और डाकू धन का हरण करने के लिए ऐसा कार्य करता है। इसलिए भावों और परिणामों में अंतर होता है। कोई कार्य करने के पीछे इरादा क्या है, इसका परिणामों पर विशेष प्रभाव पड़ता है और कर्मों का बंध हल्का अथवा गंभीर हो सकता है।

जैसी भावना होती है, वैसी ही निष्पत्ति भी प्राप्त होती है। भावनाओं में अनासक्ति होती है तो ज्यादा पाप कर्म का बंध नहीं होता, लेकिन भावना खराब होती है तो उसका परिणाम भी खराब होता है। इसलिए व्यक्ति को अपने भावों को निर्मल बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। भाव भी निर्मल हों, नीति भी शुद्ध हो और कार्य भी निर्मल रूप में हो, धार्मिक क्रियाएं अच्छे रूप में चलें तो उसकी आत्मा का कल्याण संभव है। इसलिए शास्त्र में बताया गया है कि जैसा अध्यवसाय होता है, वैसा ही फल भी प्राप्त होता है।

आचार्यश्री ने मंगल प्रवचन के उपरान्त उपस्थित जनता को 'तेरापंथ प्रबोध' के आख्यान से लाभान्वित किया। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में जैन विश्व भारती की समण संस्कृति संकाय विभाग के अंतर्गत आयोजित जैन विद्या का 25वां दीक्षान्त समारोह कार्यक्रम समायोजित हुआ। इस संदर्भ में जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कीर्तिकुमारजी ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़, समण संस्कृति संकाय विभाग के सहविभागाध्यक्ष हनुमान लूंकड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। इस संदर्भ में आचार्यश्री ने मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि विद्या और चारित्र मोक्ष का मार्ग है। जैन विद्या में अनेक विषय समाविष्ट हो जाते हैं। जैन विश्व भारती के नाम में ही जैन विद्या समाविष्ट है। कितने वर्षों से जैन विद्या का उपक्रम चलाया जा रहा है। जैन विद्या को प्रसारित करने में अच्छी सहायक बन रही है। यह संकाय ज्ञान का प्रसार करने में योगदान देती रहे। जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों आदि ने सम्यक् दर्शन कार्यशाला के बैनर को आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पित किया। आचार्यश्री ने संथारा करने वाली रेशमीदेवी चौपड़ा के परिजनों को आध्यात्मिक संबल प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

देह ममत्त्व है अध्यात्म साधना में बाधक : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
30 जुलाई, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने वीर भिक्षु समवसरण में 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भौतिकता और आध्यात्मिकता दो चीजें हैं। भौतिकता मूर्त है और आध्यात्मिकता अमूर्त है। आत्मा के साथ कर्म है। आत्मा अपने आप में विशुद्ध अमूर्त तत्त्व है, कर्म पुद्गल मूर्त हैं। इन्हें हम भौतिक पदार्थ कह सकते हैं, इनमें रूप, गंध, रस, स्पर्श है, अतः इन्हें पुद्गल कह सकते हैं और पुद्गल भौतिक तत्त्व है। इस प्रकार कर्म भौतिक है और आत्मा अभौतिक है। कर्म सूक्ष्म है और आंखों से दृश्य नहीं है। शरीर स्थूल है, यह हमारे लिए दृश्य है।

जैन विद्या में पांच प्रकार के शरीर बताए गए हैं - औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस और कार्मण। एक सामान्य मनुष्य के पास तीन शरीर होते हैं - औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर। औदारिक शरीर स्थूल शरीर है, तैजस सूक्ष्म एवं कार्मण सूक्ष्मतर। हमारे जन्म-मरण का कारण कार्मण शरीर है। स्थूल शरीर बनने का कारण भी कार्मण शरीर है। हमारी प्रवृत्तियों का कारण कार्मण शरीर ही है, अतः इसे हम कारण शरीर के रूप में भी जान सकते हैं।

'आयारो' आगम में कहा गया है कि धर्म, आत्मा और अध्यात्म की बात वही जान सकता है और आगे बढ़ सकता है, जो देह के प्रति अनासक्ति का भाव रखता है। जिस आदमी का शरीर के प्रति मोह है, वह हिंसा में जा सकता है और अन्य पदार्थों के प्रति भी आसक्त हो सकता है। यह देह ममत्त्व अध्यात्म की साधना में बाधक तत्त्व है।

शरीर स्वस्थ और सक्षम रह सके, इसलिए द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के अनुसार कभी-कभी शरीर पर ध्यान देना भी अपेक्षित हो सकता है। देहासक्ति, पदार्थासक्ति के कारण व्यक्ति हिंसा में प्रवृत्त हो सकता है। जब मनुष्य आसक्ति को छोड़ देता है तो वह धर्मविद्य भी बनता है, ऋजु भी हो जाता है। साधना के क्षेत्र में ऋजुता का

अपना महत्त्व है। जो ऋजुभूत है, सरल है, उसकी शोधि होती है। हम ऋजु भी रहें और गंभीर भी रहें, यह काम्य है।

आज के कार्यक्रम में तेरापंथ समाज की सुदीर्घजीवी 'शासनश्री' साध्वी बिदामांजी की स्मृतिसभा का आयोजन किया गया। इस संदर्भ में साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी और मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी ने उनके प्रति अपनी भावांजलि अर्पित की। आचार्यश्री ने उनका संक्षिप्त जीवन परिचय प्रदान करते हुए कहा कि वे केवल सुदीर्घजीवी ही नहीं, बल्कि सुदीर्घ संयम पर्याय वाली साध्वीजी थीं। आज के इस चिकित्सा जगत की सुविधाओं के बीच जीवन जीते हुए भी वे औषधमुक्त रहीं, यह एक विशिष्ट बात थी। मानो ऐतिहासिक साध्वीजी का प्रयाण हो गया हो। आचार्यश्री ने उनकी आत्मा के कल्याण के लिए चतुर्विध धर्मसंघ के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया।

इस अवसर पर मुनि मदनकुमारजी, साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी परमयशाजी और साध्वी मधुरप्रभाजी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वीवृंद ने गीत का संगान भी किया। कालू सभा के पूर्व अध्यक्ष विनोद सिंघी ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। साध्वी बिदामांजी के ज्ञातिजनों की ओर से प्रेम चावत, धर्मचंद दक और कालू सभा के अध्यक्ष बुद्धमल लोढ़ा ने अपनी अभिव्यक्ति दी। गुरुदर्शन समन्वय यात्रा की ओर से रमेश सिंघी ने भी अपने विचार रखे।

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में जैन विश्व भारती की ओर से गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार समारोह का आयोजन हुआ। वर्ष 2025 का जैन विद्या पुरस्कार राजकुमारी सुराणा (कोलकाता) को जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों तथा अन्य गणमान्य लोगों द्वारा प्रदान किया गया। श्रीमती सुराणा का परिचय मालचंद बैंगानी ने कराया। पुरस्कार प्राप्ति के बाद राजकुमारी सुराणा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। इस कार्यक्रम का संचालन जैन विश्व भारती की ओर से जयंतीलाल सुराणा ने किया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

सही दिशा : सही प्रयत्न

राजसंमद की घटना है। संत भीखणजी ने शुद्ध आचार और शुद्ध विचार के पथ पर चलने का निश्चय कर लिया और अपना निश्चय श्रावकों को बता दिया। वे वहां से प्रस्थान कर आचार्य रुघनाथजी के पास आ रहे थे। वीरभाणजी तथा एक अन्य साधु आचार्य रुघनाथजी के पास आगे पहुंचे। संत भीखणजी ने निषेध किया था कि राजनगर के निश्चय की चर्चा मेरे आने से पूर्व आचार्य रुघनाथजी के पास न की जाए पर वीरभाणजी अपने आपको रोक नहीं सके। आचार्य रुघनाथजी ने पूछा– राजनगर के श्रावक समझ गये? वीरभाणजी बोले– श्रावक क्या भीखणजी समझ गए। उन्होंने भीखणजी के निश्चय की बात उन्हें बता दी। आचार्य रुघनाथजी सारी बात सुन अप्रसन्न हो गए।

कुछ दिनों बाद संत भीखणजी पहुंचे, वंदना की। उन्होंने सिर पर हाथ नहीं रखा। भीखणजी समझ गए– बात पहुंच गयी। उन्हें कोई भय नहीं था। पर वे जो चाहते थे, उसमें विघ्न जरूर हुआ। उन्होंने विनम्रतापूर्वक गुरु को प्रसन्न किया। वे चाहते थे– मेरा निश्चय गुरु का निश्चय बन जाए तो सब काम ठीक हो जाए। उनका इस दिशा में प्रयत्न चालू हो गया।

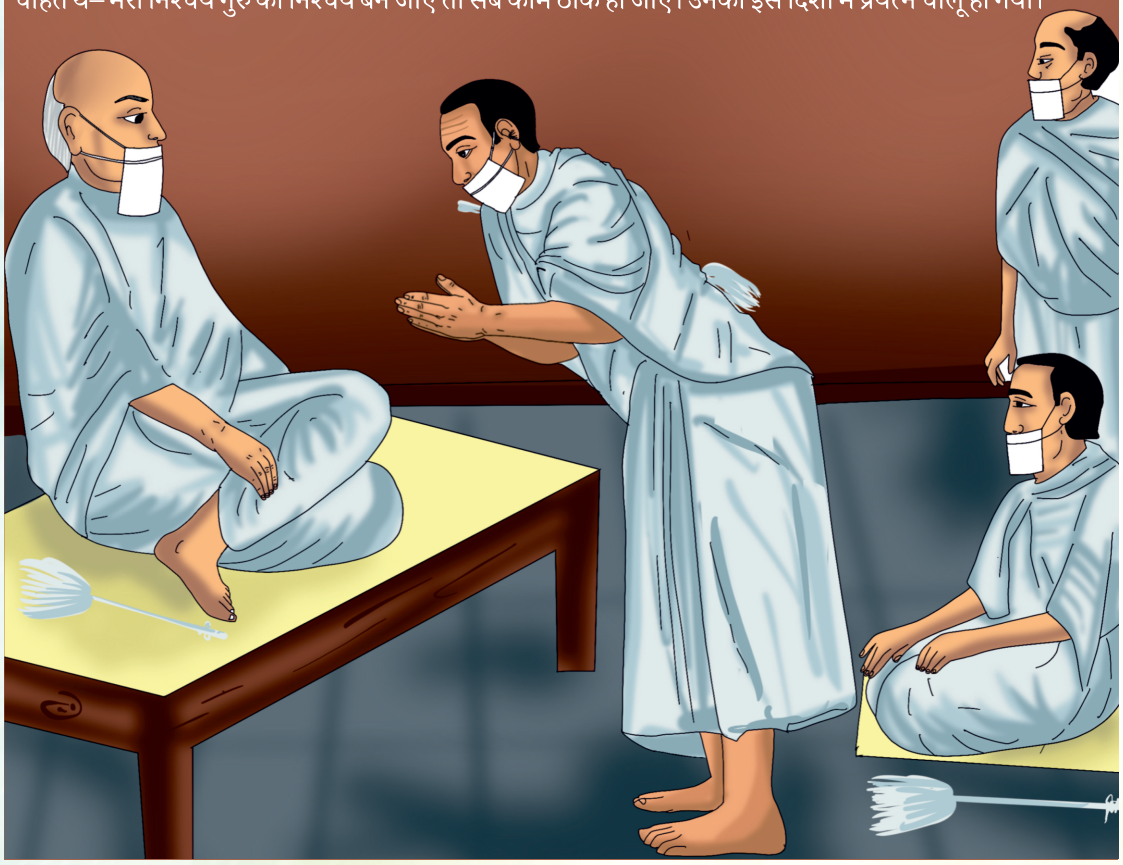

भिक्षु की कहानी
जयाचार्य की जुबानी

वास्तविकता कौन जानेगा?

रीयां गांव में हरजीमलजी सेठ ने स्वामीजी से कपड़ा लेने की प्रार्थना की। स्वामीजी बोले– 'तुम साधुओं के लिए वस्त्र मोल लेकर देते हो, उसे हम नहीं ले सकते।'

तब सेठ बोला– 'दूसरे साधु तो लेते हैं। मैंने वस्त्र खरीद कर दिया, उसमें मुझे क्या हुआ?'

तब स्वामीजी बोले– 'उन्हीं को पूछ लो।'

तब सेठ बोला– 'कहने में तो वे भी खरीद कर वस्त्र देने में पाप ही बतलाते हैं, पर उसे स्वीकार तो कर लेते हैं।'

'हमारे पहनने-ओढने के वस्त्रों में से कोई वस्त्र आप लें।'

तब स्वामीजी बोले– 'वह भी नहीं लेंगे। दूसरे साधु भी वस्त्र ले गए और भीखणजी भी वस्त्र ले गए। इसमें वास्तविकता का पता कौन लगाएगा?'

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

कर्म और निर्जरा

प्रत्येक व्यक्ति अच्छा भाग्य चाहता है, सबको अच्छा फल चाहिए। तो क्या करना चाहिए? भगवान ने समाधान दिया कि जितनी कर्मों की निर्जरा होगी उतनी आत्मा निर्मल बनेगी, जितनी आत्मा निर्मल होगी उतना भाग्य अच्छा होता जाएगा। निर्जरा दो प्रकार की होती है– 'सकाम' मोक्ष के लिए किए जाने वाली, 'अकाम' जो बिना मोक्ष की इन्छा से हो। एक कर्म ऐसा होता है जो संसार बढ़ाता है। स्वामीजी के शब्दों में समझें:

बुद्धि बा हि सराहिए, जो सेवे जिन धर्म।
बा बुद्धि किण काम री, जो पडिया बांधे कर्म।।

ऐसी बुद्धि किस काम की जो कर्मों का बन्धन करें। कर्मों की पोलिसी इतनी स्पष्ट है कि इसमें कोई भेदभाव नहीं है। जितनी अच्छी सोच, अच्छा आचरण, मन-वचन-काया से, उतना अच्छे कर्मों का उपार्जन। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के शब्दों में स्वर्ग और नर्क हमारे विचारों से प्रतिनिधित्व करते हैं, सकारात्मकता का 'स' स्वर्ग है तथा नकारात्मकता का 'न' नर्क है। जैसा कर्म वैसी निष्पत्ति। मोक्ष के लिए ना पुण्य चाहिए ना पाप चाहिए बस आत्मा साफ चाहिए। हम जीवन भर पुण्य के पीछे भागते रहते हैं, उसके लिए कि ना जाने कितने-कितने पाप भी कर बैठते हैं। अस्तु! मनुष्य सिर्फ और सिर्फ अपने कर्मों पर ध्यान दें तथा अपनी आत्मा का उद्धार करे, कल्याण करे।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

क्या आप जानते हैं?

केले का छिलका सचित्त माना जाता है। कच्चा पपीता, कच्ची केरी, जोटी सहित नारियल तथा पीसा हुआ हरा नीमड़ा सचित्त माना जाता है।

साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह सिनेमा जाने का त्याग करें।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
11 अगस्त - 17 अगस्त, 2025

तप-रूपी अग्नि से जला सकते हैं कर्म-रूपी काष्ठ : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
01 अगस्त, 2025

तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अपनी पावन देशना प्रदान करते हुए कहा— शास्त्र में जीर्ण-शीर्ण लकड़ी और अग्नि का उदाहरण बताया गया है। अग्नि जला देती है, अग्नि से ऊष्मा भी मिलती है। सर्दी के समय अग्नि के आस-पास बैठने से शीत दूर होती है, परंतु अग्नि में हाथ डाल दें तो नुकसान हो सकता है। इसलिए चीज़ों का विवेकपूर्वक उपयोग करना चाहिए। एक सीमा तक एक वस्तु का सेवन लाभदायक है। श्लोक है— 'अति सर्वत्र वर्जयेत'। सीमा का ध्यान रखो। अति किसी भी चीज़ की मत करो।

अग्नि में यदि जीर्ण-शीर्ण काष्ठ डाला जाए तो अग्नि शीघ्र उसको जला देती है। अग्नि के द्वारा जैसे शीर्ण काष्ठ जला दिया जाता है, इसी प्रकार हमारे कर्मों की निर्जरा भी हो सकती है। तपस्या को अग्नि के समान मान लें तो तप-रूपी अग्नि में कर्म-रूपी काष्ठ पड़ता है, तो तप-रूपी अग्नि उस कर्म-रूपी काष्ठ को भी जला डालती है।

साधना के क्षेत्र में संवर का तो महत्त्व है ही, निर्जरा का भी बहुत महत्त्व है। साधु तपस्या, साधना, सेवा, स्वाध्याय करता है, जिससे कर्मों की निर्जरा होती है। गृहस्थ श्रावक भी कर्म निर्जरा कर सकते हैं।

श्रावक के पूर्णव्रत संवर नहीं हैं, देशविरति है। साधु जितना संवर तो नहीं है, परंतु जितना संवर है, उसे बढ़ाने की चेष्टा करे। द्रव्यों की सीमा का संकोच करें, मौन करें— इस प्रकार त्याग, संयम को बढ़ाने और अव्रत को कम करने का प्रयास करें। साथ में निर्जरा की साधना भी चले— स्वाध्याय, ध्यान, तपस्या आदि करने से निर्जरा हो सकती है। लंबी तपस्या न हो तो भी उपवास करें। पारणे में भी संयम रखें। उपवास भी न हो तो नवकारसी की साधना करें। जो भी तप अनुकूल हो, उसे करने का प्रयास करें।

शास्त्र में कहा गया है कि— 'अग्नि जीर्ण-शीर्ण काष्ठ को शीघ्र जला देती है, वैसे ही जो शांत चित्त वाला व्यक्ति है, समाहित आत्मा वाला है, कषायों से अप्रताड़ित है— ऐसा आदमी अपनी तपस्या, साधना के द्वारा कर्मों को, कर्म शरीर को नष्ट करता है, कृश कर देता है।'

तेरापंथ प्रबोध की आख्यानमाला को आगे बढ़ाते हुए आचार्यश्री ने परम पूज्य आचार्य भिक्षु के प्रेरणादायी जीवन प्रसंगों का वर्णन किया। आचार्यश्री की पावन सन्निधि में एक माह तक चलने वाले सपाद कोटि जप अनुष्ठान का प्रारम्भ हुआ। इस जप में भाग लेने वाले लोगों को आचार्यश्री नवकार मंत्र का जप कराकर जप अनुष्ठान का शुभारम्भ कराया। मुनि राजकुमारजी ने भावपूर्ण गीत की प्रस्तुति देकर उपस्थित जनों को तप की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।